जनवरी 2010 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

Visit : www.chandamama.com/parle

FABER-CASTELL

since 1761

छोटा कलाकार

FABRIC COLOUR CONTEST

Paint by numbers	Fabric Colours	Natural Materials
1	Metallic Silver or Pearl White	Plain white cloth or cotton
2	Pearl Sky Blue	Rice
3	Metallic Gold	Tur Dal
4 & 5	Pearl Spring Green	Sand
7	Metallic Bronze	Sand
6	Light Golden Yellow (Mix of Pearl White + Pearl Golden Yellow proportionately)	Match Stick
8 & 9	Pearl Golden Yellow	Sand
10	Pearl Deep Rose	Match Stick
11	Metallic Copper	Sand

- Enlarge the design to 15 x11" (approx)
- Match the numbers printed on the picture to the colour chart and pasting of natural materials
- First paste the natural materials on the numbers in the picture as suggested in the table (You can also use different materials to make it more creative)
- Paint over the natural materials using the shades given in table
- Let the colours dry for 2 hours

WIN Gift hampers worth
1st Prize: Rs.1500
2nd Prize: Rs.500
3rd Prize: Rs.150

10 Consolation Prizes worth Rs.100

Faber-Castell Certificates for 20 Best Entries

WINNERS photographs will be published in the magazine

Participate in all 6 contests and win a MEGA PRIZE

Stocks are available at an outlet near you

Email : info@faber-castell.co.in
website : www.faber-castell.co.in

Fill in Your complete details. Only completely filled forms are entitled for participation

Name: ______________ Std: ________ School Add.: ______________

Add. (Res.) : ______________ Telephone: ______________

Mention any Faber-Castell products you use: ______________

Send your entries to **Chandamama India Pvt. Ltd.**, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093, Phone +91 22 28312872 / 28311849. Last Date: 30th Jan 2009
Judging of winners is at the sole discretion of Faber-Castell. Structure of gift hampers will be decided by **Faber-Castell (I) Pvt. Ltd.** Entries received will be the sole property of Faber-Castell
Paste the cartons (Front Panel) of the Faber-Castell Fabric colours only (6 Pearl Fabric Colours and 4 Metallic Fabric Colours). Kindly send your photographs with your entries

सम्पुट-६१ जनवरी २०१० सञ्चिका-१

नाम.. आयु........

पता..

....

....

फोन.................... ई-मेल...

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषय के पास दी गयी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

H

अंतरंग

चन्दामामा

०६ पाठकों का पन्ना
०७ भारत माता को सलाम!
क्लासिकी
०८ दो बेटियाँ
११ प्रेम के लिए
१७ आर्य-२
२१ युद्धकाण्ड-१३
२७ मित्र भेद-२
क्रियाकलाप
३१ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता
३२ तेज़ फार्मूला
३३ यूरेका
३४ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१२
लघु कथाएँ
३५ मानव भगवान
३९ अतिथि-सत्कार
४३ जीवन नदी
४४ जंगल में मंदिर
भारत निर्देशिका
४८ चूँ चूँ का डिब्बा
५० भारत दर्शक
५१ निष्प्राण शहर
धारावाहिक
५५ पाताल दुर्ग
६२ वास्तविक रूप
समाचार
६८ उदीयमान सितारा
६९ समाचार झलक
विविध
७० हँसते-हँसते हो जा लोटपोट
७१ ज़हीन फकीर

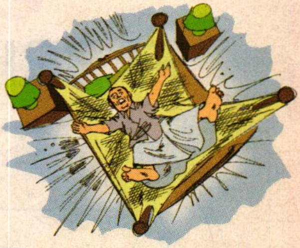

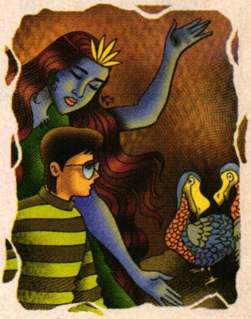

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

आगामी वर्ष

अभिनंदन मित्रो !

आपको चन्दामामा परिवार की ओर से नव वर्ष की शुभकामना। जब हम पीछे मुड़कर २००९ की ओर देखते हैं तो ऐसा लगता है कि साल रेत की तेज़ी से हमारे हाथों से फिसल गया। पिछला वर्ष मंदी के दौर, मानसून की आँख मिचोली आदि के साथ हमारे लिए बहुत ही कठिन था पर इन सब के बावजूद इसके कुछ सुनहरे पल भी आए। हमने खेल में, विज्ञान में (चन्द्रयान द्वारा) उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और साथ ही भारत, एक देश के रूप में आर्थिक समस्याओं से अन्य देशों की अपेक्षा कहीं अधिक बेहतर तरीके से सामना कर सका। विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए समस्याओं का सामना करते समय हमें हमेशा अपना दृष्टिकोण सकारात्मक रखना चाहिए। हमें अपने कई युवा मित्रों द्वारा अनुमोदित प्रतिज्ञाओं के बारे में कुछ रोचक पत्र प्राप्त हुए। मैं आप सभी से वैसे ही पत्र भेजने का अनुरोध करता हूँ।

२६ जनवरी, जिस दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ और एक प्रभुसत्ता-संपन्न लोकतंत्र बना, को हम गणतंत्र दिवस मनाते हैं। शायद संसार का सबसे विस्तृत संविधान हमारा है, जिसके लेखन में विचारों की गहराई तथा विस्तार देखने को मिलता है। लेकिन इन सभी कार्यों के प्रकरण साथ-साथ, हमें सदा बदलते समय के साथ अपनी गति बनाए रखने की तथा बदलाव लाने की आवश्यकता है।

१४ जनवरी, जो दिन शीत अयनांत के दौरान धरती के उत्तरी गोलार्द्ध के कोण में प्रवेश का प्रतीक है, को हम मकर-संक्रांति मनाते हैं। दक्षिण में हम पोंगल-फसलों का त्योहार मनाते हैं। इस माह में हम बसंत पंचमी भी मनाते हैं जिसमें देवी सरस्वती की पूजा की जाती है।

इस वर्ष हम कुछ नई रोचक पुस्तकों का प्रकाशन शुरू कर रहे हैं। सर्व प्रथम *चन्दामामा* का कलाकारों को हमारी श्रद्धांजलि - पिछले ६० वर्षों में शंकर, चित्रा, एम टी वी तथा वप्पा द्वारा तैयार किए आवरण पृष्ठों का एक संकलन है। हम २०१० की शुरुआत इसी बहुप्रतीक्षित पुस्तक से करेंगे।

- संपादक

जनवरी २०१० Rs.20/-
Founded by B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editors : Sowmya Rajendran, R. Vaasugi, A. Prem Kumar
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Rama
Layout Designers : B. Thirumal, K. Narendra
Sanjay B Thorat : *Head - Sales and Circulation*
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Mobile +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
Rajendra K Jadhav : *Asst. Manager - Circulation*
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bengaluru :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
Chennai : K. Ravishankar, *Sales Officer - Circulation,* Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
Business Development : Ananth Prakash
Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Content Head - Online : Sowmya Bharadwaj
email : online@chandamama.com
Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
e-mail : subscription@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com

Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, 2/513, Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Thiruvanmiyur, Chennai - 600 041. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र

चन्दामामा मेरी प्रिय पत्रिका है। इसकी परम्परागत कहानियाँ तथा वेताल कथाएँ मुझे सबसे अधिक पसंद हैं। इन दिनों *चन्दामामा* में कुछ परिवर्तन देखने को मिले हैं। इसमें ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियों का समावेश करने का प्रयास किया गया है, यह तो ठीक है, किन्तु ध्यान रखा जाए कि कहानियों की संख्या में कमी न आए। ''चूँ-चूँ का डिब्बा'' अत्यन्त रोचक स्तम्भ है। इससे हमें कई भाषाओं से परिचित होने का अवसर मिल रहा है। *चन्दामामा* सर्वश्रेष्ठ है और रहेगा। यदि कहानियों की संख्या और बढ़ा दी जाए तो सोने पर सुहाग हो जाएगा। आशा है, *चन्दामामा* अपनी अलग पहचान 'सदैव' कायम रखेगा।

- प्रभात मिश्रा, पटना

मैं कई वर्षों से *चन्दामामा* से जुड़ा हुआ हूँ। उम्र के इस पड़ाव पर भी इसकी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से ज्ञान में अभिवृद्धि हो रही है। दीवाली की शुभकामनाओं सहित *चन्दामामा* का अक्तूबर २००९ अंक नवीनता लिए हुए है। मुखपृष्ठ अति सुन्दर और बालकों के मन को भानेवाला प्रतीत होता है। आशा है नये परिवेश में भी *चन्दामामा* पाठकों द्वारा पसंद किया जाएगा। प्रकृति और जिन्दगी में यथासमय बदलाव आते ही हैं। प्रगतिशील लोगों को मानसिक स्तर पर भी बदलती परिस्थितियों के लिए सकारात्मक दृष्टि से तैयार रहना चाहिए। *चन्दामामा* सम्पादक परिवार और सुधी पाठकों के प्रति हार्दिक मंगल कामनाएँ।

- हुकुमचंद सोगानी, उज्जैन (म.प्र.)

मैं *चन्दामामा* का पाठक हूँ। मुझे यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि *चन्दामामा* का नया रूप पुराने से बिल्कुल मेल नहीं खाता है। इसको मनपसन्द बनाने के लिए और रोचक लघु कहानियाँ प्रकाशित कीजिए।

- ई-मेल द्वारा मनोज ज्ञानानी

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

भारत माता को सलाम !

भारत आधिकारिक तौर पर स्वायत्त प्रभुसत्ता संपन्न लोकतांत्रिक गणराज्य २६ जनवरी १९५० को घोषित किया गया।

इस समय श्रमिकों पर कार्य अत्यधिक भार था जिन्होंने नई दिल्ली के सरकारी आवास पर जहाँ कहीं भी-फर्नीचर, दरवाज़े तथा दीवारों आदि पर अंकित ब्रिटिश क्राउन के चिह्नों को धैर्यपूर्वक हटाया।

छेनियों तथा पेंटब्रशों द्वारा बड़े ही उत्साह से "रॉयल", "हिज़ मजैस्टी" जैसे शब्द जहाज़ों, ट्रकों, डाकबक्सों तथा हर जगह से हटाए गए। भारत का एक नए रूप में उद्भव हो रहा था ! क्या २६ जनवरी गणतंत्र दिवस के तौर पर चुना गया था? नहीं। यह वह दिन था जब वर्षों पहले १९२७ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस के सदस्यों ने लोकतांत्रिक गणराज्य भारत हेतु कार्य करने की शपथ ग्रहण की थी।

देश का सबसे पहला गणतंत्र दिवस बहुत ही विशेष समारोह था, लेकिन यह अपनी सादगी में अद्भुत था। लोग एक साथ अपने पहले राष्ट्रपति का गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए इरविन स्टेडियम मे एकत्रित हुए तथा राष्ट्रपति शान से एक घोड़ागाड़ी में पहुँचे ! राष्ट्रपति का उद्बोधन अति स्पष्ट तथा संक्षिप्त था। सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने के पश्चात राष्ट्रपति, जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य नेता गण जनता से मिले तथा लोगों से बातें की। पूरे कार्यक्रम मात्र दो घंटों में समाप्त हो गया !

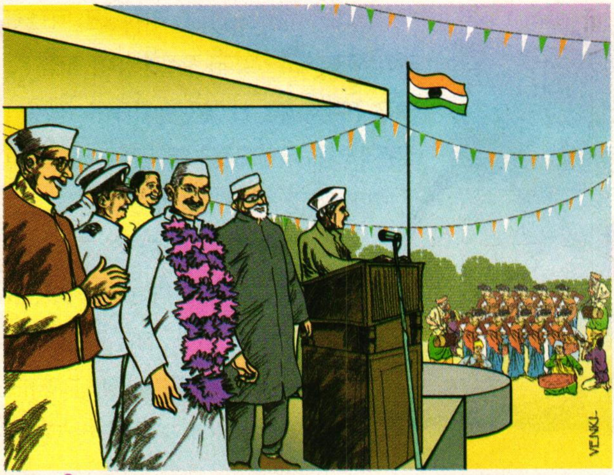

यह वह दिन है जो तमाम अनेकताओं के बावजूद पूरे देश को एक सूत्र में बाँधता है। १९५० में गणतंत्र दिवस मनाते हुए गान्धी टोपी, पगड़ियों तथा राजनयिक टोपों की बहुतायत हुआ करती थी। आज यह भिन्न नहीं है।

अनेकता भारत की ताकत है और आओ हम शपथ लें कि अनेकानेक गणतंत्र दिवस मनाने के लिए हम इसकी रक्षा करेंगे।

To walk चलना నడవడానికి Telugu नडवडानिकि

केरल की लोक कथा

दो बेटियाँ

नारियल के पेड़ों से घिरे एक छोटे से गाँव में एक बुजुर्ग दंपति रहते थे। अन्य सभी कुर्वा जन-जातियों की भाँति ही वे सदा सादा जीवन जीते थे। एक छप्परवाली झोपड़ी उनका घर था तथा एक मोटी दरी उनका बिस्तर लेकिन इतने पर भी वे संतुष्ट व सुखी थे- और यही सबसे बड़ी बात थी!

दंपति बहुत साधारण थे और बाहरी दुनिया से बिल्कुल कटे हुए थे। उन्होंने अपनी दोनों बेटियों का विवाह अत्यंत साधारण परिवारों में किया। वे मिट्टी में हल जोतते तथा दिन में दो बार सादा भोजन करते। दिन आराम से गुज़र रहे थे।

लेकिन एक दिन बूढ़ी औरत सोच में डूबी थी। उसने अपने पति से कहा, ''हमने अपनी बेटियों की शादी तो कर दी पर हम आखिरी बार कब उनसे मिलने गए?'' बूढ़े आदमी ने अपना सर हिलाया। उसे अपनी बेटियाँ बहुत प्यारी थीं और वह भी उन्हें देखना चाहता था। उनकी बेटियों को घर आए एक साल बीत चुका था।

बूढ़े आदमी ने अगले दिन अपनी बड़ी बेटी के घर जाकर उससे मिलने का निश्चय किया। वह पास ही के गाँव में रहती थी और पैदल आधे दिन में पहुँचा जा सकता था। सुबह तड़के ही उसने अपने छाता ताना तथा अपने कंधे पर केले का एक बड़ा गुच्छा लाद कर वह निकल पड़ा।

वह दोपहर तक उसके घर पहुँच गया। उसकी बेटी भी उसके जैसी ही एक छप्पर वाली झोपड़ी में रहती थी। वह आँगन में भोजन पका रही थी। आग पर एक बर्तन में चावल उबल रहे थे और वह एक कद्दू काट रही थी। जब उसने अपने पिता को देखा तो दौड़ कर उसका स्वागत किया।

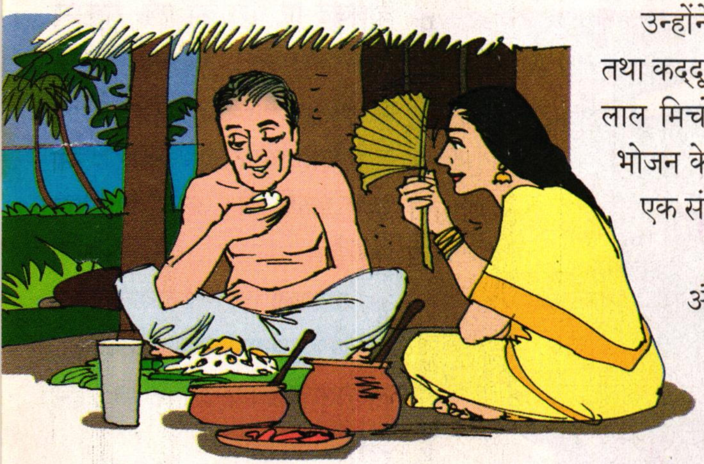

उन्होंने साथ-साथ नमकीन चावल तथा कद्दू की रसीली सब्ज़ी तथा तली हुई लाल मिर्चों का साधारण भोजन किया। भोजन के बाद उसने आराम किया तथा एक संतुष्ट व्यक्ति की तरह जागा।

अगले दिन जब वह घर लौटा, बूढ़ी औरत उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। ''मेरी बेटी कैसी है?'' उसने पूछा। ''वह बिल्कुल ठीक है तथा सुख से रह रही है

To walk चलना நடக்க Tamil नडक्क

जैसे हम रहते हैं!'' उसने मुस्कुराते हुए उसे उत्तर दिया। दंपति बेहद खुश थे कि वह एक अच्छे घर में रह रही थी।

बूढ़ा व्यक्ति अपनी छोटी बेटी को देखने के लिए उत्सुक था। उसने एक झोले में कुछ मुलायम नारियल भरे अपना छाता लिया और एक बार फिर चल पड़ा। वह शाम तक गाँव पहुँचा तथा राहगीरों से बेटी दामाद के पर का पता पूछा। उसे एक दो मंज़िला लोहे के दरवाज़े लगे घर का पता बताया गया। उसे देख कर उसका मुख खुला का खुला रह गया। उसने अपनी ज़िन्दगी में इतनी बरी इमारत नहीं देखी थी!

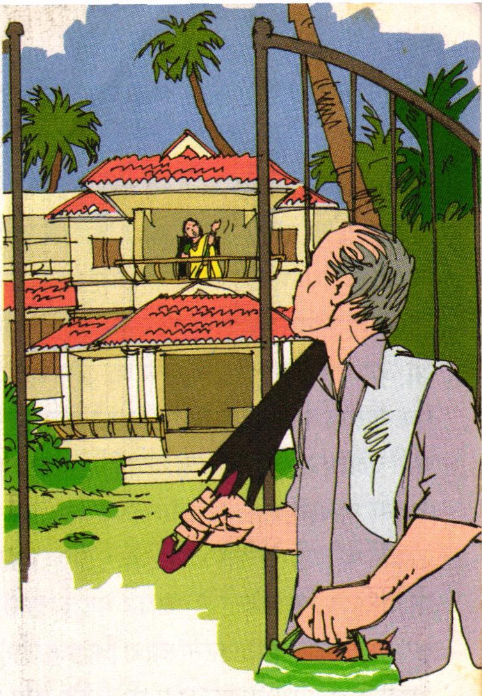

वह इतने बड़े घर में रहनेवाले की प्रसन्नता के अनुभव का अनुमान भी न लगा सका। उसे पक्का विश्वास था कि उसकी बेटी यहाँ नहीं रहती होगी और वह लौटने को ही था कि उसे अपनी बेटी द्वारा उसे पुकारे जाने की आवाज़ सुनाई दी।

''पिताजी, अंदर आइए! हमारे घर में स्वागत है!'' वह खुशी से चिल्लाई।

वह उसे अंदर ले गई और उसे एक गद्देदार कुर्सी पर बिठाया। बूढ़ा आदमी इससे पहले कभी गद्दे पर नहीं बैठा था और उसने बहुत ही असहज महसूस किया।

''खासी पुरानी मिट्टी के फर्श जैसा कुछ नहीं,'' वह स्वयं से बड़बड़ाया।

तब तक उसकी बेटी उसके लिए शानदार भोजन तैयार करने में लगी थी। उसने उम्मीद की थी कि वह फर्श पर बैठ कर केले के पत्ते पर भोजन करेगा। लेकिन क्या नज़ारा था। भाप उड़ाता चावल थालियों में भरा था तथा वहाँ भाँति भाँति की तली हुई मछलियाँ तथा अन्य कई प्रकार के मसालेदार व्यंजन मेज़ पर परोसे हुए थे। बूढ़ा आदमी एकदम चकित था।

उसने मछली का एक टुकड़ा लिया, अपने चावलों पर थोड़ा नमक छिड़का और एक मिर्ची ली उसकी बेटी और दामाद उसके पास खड़े थे तथा उसे और अधिक खाने का आग्रह किया। उसने इतना खाया कि इससे पहले कभी इतना नहीं खाया था। भोजन के बाद उसको भारीपन तथा बोझिल महसूस हुआ वह तुरंत ही लेटना तथा सोना चाहता था। उसने अपनी बेटी से लेटने के लिए एक मोटी दरी माँगी लेकिन वह उसे एक शयनकक्ष में ले गई और उससे बिस्तर पर सोने के लिए कहा।

To walk	चलना	হাঁটা	Bengali	हाँटा

बिस्तर के चारों डंडों पर मच्छरदानी तानी हुई थी। अब, बूढ़े आदमी ने तो कभी एक उचित बिस्तर या एक मच्छरदानी भी नहीं देखी थी! वह इसे घूरता रह गया। उसन सोचा कि उसे डंडे पर चढ़ना है तथा मच्छरदानी के ऊपर सोना होगा!

बूढ़ा आदमी बहुत पहले कभी पेड़ों पर चढ़ा था जब वह एक छोटा बालक था और यह उसे एक बालक का खेल ही लगा। बुढ़ापे बावजूद वह बड़ी दक्षता से डंडे पर चढ़ गया। उसने दुःख से अपना सर झटका, वह आश्चर्यचकित था कि उसकी बेटी को लेटने तथा सोने के लिए ही कितनी परेशानी उठानी पड़ती है। उसने मच्छरदानी के ऊपर स्वयं को सीधा करना चाहा कि एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ बेचारा बूढ़ा नीचे गिर पड़ा।

शयन कक्ष से आयी आवाज़ सुन कर घर के लोग जाग गए। वे दौड़े हुए अंदर आए और बूढ़े आदमी ने अपनी बेटी को सारी घटना सुनाई।

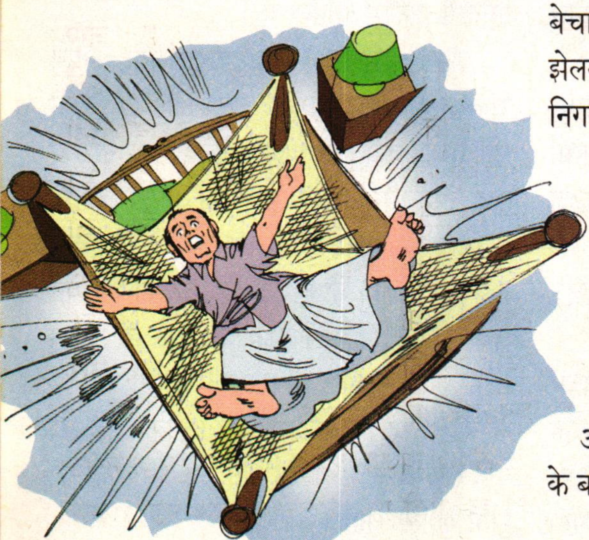

उन्होंने अपनी हंसी को दबाया तथा आराम करने को कहा लेकिन उसने किसी भी हालत में बिस्तर पर जाने से मना कर दिया!

आखिर में उसने अपने लिए एक दरी ली और उस पर लेटा व सो गया। अगले दिन परेशान बूढ़ा जागा और दाँत माँजने के लिए आया। वह हमेशा ही अपने दाँत नीम की दातून से रगड़ा करता था लेकिन उसकी बेटी ने उसे उसके हाथ पर थोड़ा दाँत माँजने का चूर्ण रख दिया। उसे पता ही नहीं था कि इससे क्या किया जाए। उसने इसे निगल जाने का निश्चय किया। उसकी बेटी अंदर आयी और उसने अपने पिता को खाँसते और थूकते देखा!

तब तक बूढ़ा आदमी काफी कारनामे झेल चुका था। वह तुरंत ही घर के लिए रवाना हो गया। जब अपने घर पहुँच वह ज़ोर से रो पड़ा। उसकी पत्नी ने अपनी बेटी के बारे में पूछा। ''ओह बेचारी लड़की! उसे अपने घर में कितनी तकलीफें झेलनी पड़ती हैं! सुबह उसे एक भयानक चूर्ण निगलना पड़ता है और बहुत भारी भोजन करना पड़ता है!'' उसने चिंतित होते हुए बताया।

''लेकिन तुम्हें पता है? रातों में उसे बहुत ही अजीब भयानक बिस्तरों के ऊपर चढ़कर सोना पड़ता है!'' उसने भावावेश में कहा। बूढ़ी औरत डर गयी। बूढ़े दंपति सोने चल दिए लेकिन वे किसी भी हाल में अपनी छोटी बेटी तथा उसकी कष्टमय ज़िंदगी के बारे में चिंता करना नहीं छोड़ सके!

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

To walk	चलना	चालणे	Marathi	चालणे

वेताल कथा

प्रेम के लिए

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल कर यथावत् श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम्हारे असमान हठ, विवेक और कौशल को देखते हुए लगता है कि लोक हित कार्य को हर हाल में साधने पर तुले हो। सच कहा जाए तो जो प्रजा प्रेम अपना धर्म समझते हैं, उन्हें देश, काल की परिस्थितियों को रुकावट नहीं समझना चाहिए। यह तथ्य तुम्हें भी मालूम है। पर, मैं तुम्हें एक युवक की गाथा सुनाऊँगा, जो प्रजा की बाधाओं को दूर कर सकता था, किन्तु स्वार्थवश एक अद्भुत मौके को खो दिया। ध्यान-पूर्वक उसकी कहानी सुनो।'' फिर वेताल उसे युवक की कहानी सुनाने लगा।

सौम्या विजय नगर के प्रमुख व्यापारी हेमगुप्त की इकलौती पुत्री थी। एक दिन वह अपनी सखियों के साथ वन विहार के लिए गई। थोड़ी देर बाद ही वह अपनी सहेलियों से अलग हो गई

और जब वह सरोवर में खिले कमल के पुष्प तोड़ने के लिए झुकी उसका पैर फिसला और वह पानी में जा गिरी। उसे तैरना नहीं आता था अतः पानी गहरा होने की वजह से डूबने लगी। तभी उधर से गुज़रते एक सात्विक नामक युवक की दृष्टि उस पर पड़ी और तुरंत ही पानी में कूद कर उसने सौम्या के प्राणों की रक्षा की। वह नगर के पास ही के गाँव का निवासी था। दोनों का एक दूसरे से परिचय हुआ और वह परिचय कुछ दिनों में प्रेम में परिणत हो गया।

एक दिन सात्विक सौम्या के पिता हेमगुप्त से मिला और अपने प्रेम के बारे में बताया व सौम्या से विवाह की विनती की।

''विवाह करने के लिए अवश्य ही चंद योग्यताओं की आवश्यकता होती है। मेरी जानकारी के अनुसार मेरी बेटी से विवाह की योग्यता तुममें नहीं है। अब तुम जा सकते हो।'' हेमगुप्त ने कड़ुवे स्वर में कहा।

''महोदय, वे योग्यताएँ क्या हैं, जो मुझमें नहीं हैं?'' सात्विक ने पूछा।

''एक भी योग्यता तुममें नहीं है। असल में सौम्या मेरी इकलौती बेटी है। मेरा सारा कारोबार आदि उसका होगा जो उससे विवाह करेगा। व्यापार में दक्षता उससे विवाह करने की पहली शर्त व योग्यता है। मैं ऐसे व्यक्ति को दमाद बनाना चाहता हूँ जो व्यापार की बारीकियों को जाने। मैंने अपने एक निकट मित्र के बेटे उदय को अपना दामाद चुन लिया है और उसी से मेरी बेटी का विवाह होगा।''

उसी समय सौम्या वहाँ आयी। वह अपने पिता की बातें सुनकर सन्न रह गई। उसने पिता से कहा कि वह सात्विक से प्रेम करती है। हेमगुप्त ने सर हिलाते हुए सात्विक को ध्यान से देखा।

''जो समर्थ हो, जिसमें दृढ़ता व लगन हो, ऐसा व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल हो सकता है। मैं साबित कर सकता हूँ कि मैं आप जैसा व्यापारी बन सकूँगा।'' सात्विक ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

''तो ठीक है, मैं एक लाख अशर्फियों के मूल्य की सामग्री जहाज़ में भर दूँगा। साथ ही दस आदमी भी भेजूँगा। साल भर के अंदर उस सामग्री को बेच कर लाख अशर्फियाँ कमा कर लाओगे। अगर तुम ऐसा कर सके तो अपनी बेटी का विवाह

To walk | चलना | ನಡೆಯಲು | Kannada | नडेयलु

मैं तुमसे करने को तैयार हूँ। क्या यह शर्त तुम्हें स्वीकार है?'' हेमगुप्त ने पूछा।

सात्विक ने शर्त मान ली। दूसरे ही दिन वह जहाज़ में निकल पड़ा।

वह अरब देश पहुँचा और अपने साथ लाई वस्तुओं को जी-जान से बेचने में लग गया। कुछ ही महीनों में उसने बीस लाख अशर्फियाँ कमा लीं। वह बहुत ही प्रसन्न मन से जहाज़ में अपना देश लौटने लगा।

तीन दिनों की यात्रा के बाद जहाज़ एक द्वीप पर पहुँचा। सात्विक ने जैसे ही उस प्रदेश को देखा, उसने अपने आदमियों से कहा, ''मैं कभी भी स्वस्थल छोड़ कर कहीं नहीं गया फिर क्यों यह देश मुझे अपना सा लगता है। इस प्रदेश की कुछ अस्पष्ट यादें याद आ रही हैं। लगता है जैसे कि यह प्रदेश चिर-परिचित है। क्या हम जहाज़ से उतर कर इस प्रदेश को देखें?''

साथ के आदमियों के 'हाँ' कहने पर वह दो साथियों को लेकर घूमने निकला। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने देखा कि एक बहुत ही बूढ़ा आदमी पेड़ से सट कर बैठा हुआ है। उसके पास पहुँचते ही सात्विक ने कहा, ''दादा जी, इस पहाड़ से उस तरफ जाएँ तो मोती नगर नामक एक जगह आती है न?'' बूढ़े आदमी ने सिर ऊपर उठा कर उसे नख से शिख तक ध्यान से देखा और कहा, ''तुम कौन हो भाई? एकदम हमारे प्रताप महाराज की तरह लगते हो। हमें देखने के लिए क्या पुनर्जन्म लेकर आए हो?''

''हालांकि मैं एक किसान का बेटा हूँ परंतु अपने सपनों में अकसर देखा करता हूँ कि मैं एक

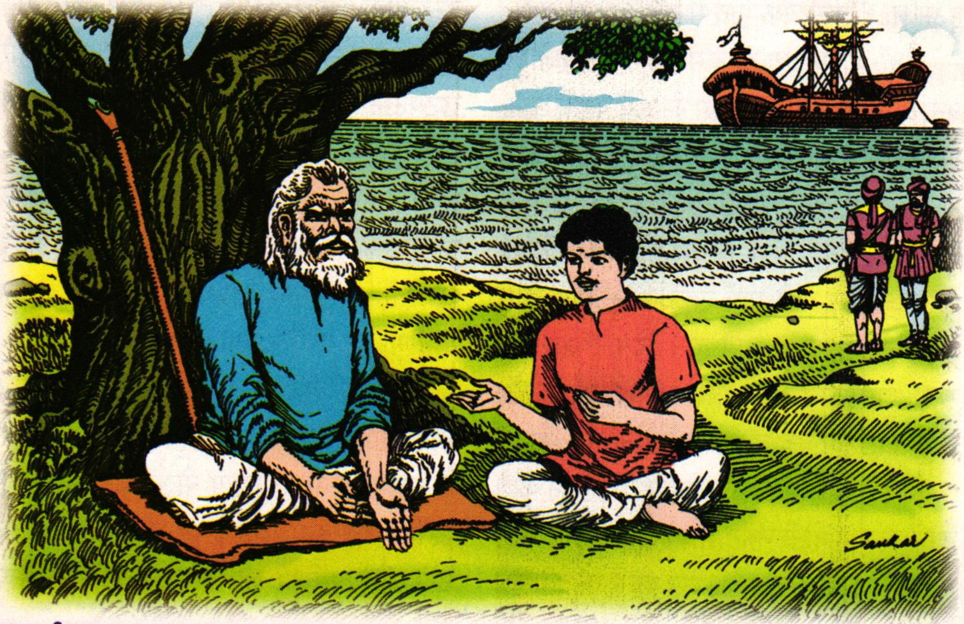

To walk चलना ଚାଲିବା Oriya चालिबा

राजा हूँ और मैंने एक शासन भी सँभाला हुआ है। अब समझ आया कि मैंने इन सपनों को भ्रम माना हुआ था।'' सात्विक याद में खोए हुए बोला।

''हाँ, मैं धनंजय ही हूँ महाराज!'' कहते हुए बूढ़ा आनंदातिरेक से आँखों से अश्रु बहाने लगा, फिर वह तुरंत ही उठ खड़ा हुआ और बोला, ''आप सचमुच ही हमारे महाराज हैं। आपने बिल्कुल ठीक कहा। आप मेरे साथ चलिए। आपको देख कर खुश होने वाले यहाँ बहुत लोग हैं।'' कहते हुए धनंजय आगे-आगे चल दिया। जब सब साथ-साथ चल रहे थे, तब पचास वर्ष पूर्व की बातें करते हुए वृद्ध बहुत सी बातें बताने लगा।

ऐयाश राजा भुजंगेश रानी सहित देशाटन करते हुए एक बार मोती नगर आया। चारों ओर फैली हरियाली व वन्य संपदा को देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। जल प्रपात देख कर तो वे चित्र लिखित से रह गए थे। रानी यहाँ के मनोहर दृश्यों को अपलक निहारती रहीं। उन्होंने अपने पति से कहा, ''इस सुन्दर प्रदेश में एक भवन का निर्माण कराएँगे। गर्मी के दिनों में हम यहाँ आराम कर सकेंगे।''

राजा कभी भी पत्नी की इच्छाओं को मना नहीं करता था जैसे ही वह राजधानी पहुँचा, अधिकारियों को आज्ञा दी कि वहाँ एक सुन्दर भवन का निर्माण कराया जाए। यह सब जानते ही मोती नगर के ग्रामीण निवासी परेशान हो उठे। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उन्हें एक दिन अपना स्वर्ग जैसा गाँव छोड़ कर जाना पड़ेगा। वे पीढ़ियों से यहाँ रहते आ रहे हैं, प्रपात के निर्मल जल से अपने खेतों को सींच कर उन्होंने सौभाग्यप्रद व सोना उगलने वाला बनाया, वह उन्हें बिना किसी कारण त्याग देना होगा मात्र एक राजा की रानी के सुख हेतु। वे दुःख के मारे छटपटाने लगे। अपनी परिस्थितियाँ उन्होंने अधिकारियों को बतायी पर उन्होंने राजाज्ञा को सर्वोपरि मानते हुए उनकी एक बात न सुनी बल्कि ग्रामीणों के देर करने पर उनके बरतन कपड़े आदि ज़रूरतों का सामान उठा कर बाहर फेंक दिया व ग्रामीणों को वहाँ से भगा दिया।

यह सब देख कर ग्रामीण क्रोधित हो उठे। प्रताप नामक एक युवक के नेतृत्व में सभी ग्रामीणों ने अधिकारियों पर धावा बोल दिया और उन्हें वहाँ से भगा दिया। यह जानकर राजा क्रोध से भर उठा और ग्रामीणों का विरोध कुचलने के लिए

To walk	चलना	ચાલવું	Gujarati	चालवुं

सशस्त्र सेना भेजी। उन सैनिकों ने कितनों को ही मार डाला। प्रताप समेत कुछ युवक जंगलों में जाकर छिप गए।

उसके बाद नौ महीनों के बाद मोतीनगर में राजा का भव्य भवन बन कर तैयार हुआ। इसी अवधि में प्रताप छद्म वेश कारण करके दुष्ट राजा के अत्याचारों का प्रचार करने लगा। कुछ ही दिनों में प्रजा राजा के विरुद्ध विद्रोह करने को सन्नद्ध हो उठी। रानी सहित मोती नगर आए राजा को प्रजा ने क्रोध करके मार डाला। दुष्ट भुजंगेश का शासन इस तरह समाप्त हुआ।

ठीक इसी समय भुजंगेश के पुत्र, जो अपने मामा के यहाँ पला बढ़ा था, की शादी अपने पड़ोसी राजा मार्तण्ड की बेटी से हुई। पड़ोसी राजा होने के कारण वे भुजंगेश की मृत्यु के संबंध में सब बातें जानते थे। उनके मंत्री ने प्रताप के अनुचरों में से एक को अपना आदमी बना लिया तथा प्रताप को विष देकर मार डाला। तत्पश्चात् भुजंगेश का पुत्र मारकेश इस प्रदेश का अन्यायी राजा बन बैठा है।

पूरा वृत्तांत सुनाने के पश्चात् धनंजय ने कहा, ''आपकी रानी पति का वियोग सह नहीं पायी और मर गई तथा आपका पुत्र जयपति अब जेल में सड़ रहा है। राजकुमार मारकेश प्रजा को अपने पिता से भी अधिक पीड़ित कर रहा है। मोती नगर की प्रजा अब तितर-बितर हो गई और उन्हें अब आप जैसे नायक की सख्त ज़रूरत है।''

धनंजय की बातों को सुनते ही सात्विक को

एक-एक करके सारी बातें याद आने लगीं। सारा सत्य सामने आ गया। उसने खूब सोचा। फिर पास के सरोवर में जाकर हाथ-मुँह धोया और धनंजय के पास आकर कहने लगा, ''धनंजय अब तुम मुझे माफ करना।'' यह कह कर वह जहाज की ओर बढ़ गया।

एक हफ्ते बाद विजय नगर पहुँचा, हेमगुप्त की शर्त के अनुसार उससे भी दोगुना धन कमाकर उसे सौंप दिया और अपने को योग्य साबित कर दिखाया। फिर सौम्या से विवाह करके आराम से जीवन बिताने लगा।

वेताला ने अपने संदेहों को व्यक्त करते हुए राजा से पूछा, ''राजन्, सात्विक ने हेमगुप्त से कहा कि समर्थ व दृढ़ संकल्प व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल हो सकता है। तब उसने वह मौका

To walk चलना খোজ কাঢ়া Assamese खोज काढ़ो

क्यों छोड़ दिया जो उसके हाथ में आया था? एक व्यापारी के दामाद बनने से प्रजा को पीड़ा मुक्त कराना, राज्य का अधिपति बनना क्या अधिक उत्तम लक्ष्य नहीं है? धनंजय के बताए उसके पूर्व जन्म के वृत्तान्त पर क्या उसे विश्वास नहीं था? अगर विश्वास था तो अपनी संतान को जेल में सड़ने को क्यों छोड़ दिया? उसे छुड़ाने का प्रयास क्यों नहीं किया। मेरे इन संदेहों का हल जानते हुए भी यदि तुम चुप रहोगे तो तुम्हारा सर फट जाएगा।''

तब राजा विक्रमार्क ने कहा, ''यद्यपि धनंजय के बताए अपने पूर्व जन्म के वृत्तान्त पर उसे पूरा विश्वास हुआ था क्योंकि वह सब उसके स्वप्न से भी मिलता था। पर उस अनुपात में उसका हृदय स्पंदित नहीं हुआ। मोती नगर की वर्तमान परिस्थितियों के संबंध में उसे पूरी जानकारी नहीं थी। वह उन दैनिक अनुभवों को भी नहीं जानता था जो वहाँ के निवासी जानते थे। उसे लगा भी कि पीड़ित प्रजा को विद्रोह करना चाहिए पर वह अचानक इस प्रकार का विद्रोह कैसे कर सकता था। स्वंय प्रताप को, जो कि उनके साथ पला बढ़ा, राजा से सफल विद्रोह की तैयारी करने में नौ महीने लग गए। फिर उसी दिन वहाँ उतरा वह अकेला बिना लोगों को इकट्ठा किए कैसे विद्रोह कर पाएगा। अगर विद्रोह किया भी गया तो भी राजा आसानी से अपनी शक्ति के बल पर विद्रोह को दबा देगा। ऐसे में वह और भी अत्याचारी हो जाएगा और प्रजा का क्रोध से उत्पन्न थोड़ा बहुत मनोबल भी टूट जाएगा। जबकि प्रजा यदि स्वयं विद्रोह करती है तो उसका मनोबल ही इतना अधिक बलवान होगा कि वह राजा को गद्दी से उतार कर ही छोड़ेगी। इसी कारण उसने लौटने का निश्चय किया। इसके अलावा दूसरी ओर उसे हेमगुप्त को बताना था कि उसने शर्त पूर्ण कर सफलता प्राप्त की है। अपनी प्रेयसी को दिया वचन पूर्ण रूप से निभाना अधिक उचित लगा बजाय इसके कि मोतीनगर की प्रजा सहायता करके अनजाने में अहित किया जाए। अतः उसने वापस विजय नगर आने का निर्णय लिया।''

राजा का मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : जि.रामकृष्ण की रचना)

To walk | चलना | നടക്കുക | Malayalam | नडक्कुक

12
आर्य
लाल मणि की खोज
चित्रः गाँधी अय्या
धर्म पिता आर्य को बताता है कि एक वही इन भूले-बिसरे बच्चों के लिए जिम्मेवार है। वह मादा भेड़िया, मरिघा, की स्वर्णद्वीप की लाल मणि के शिकार में उसकी सहायता कर रहा है।
जब आर्य सब घटना याद करता है, वह रहस्यमयी धर्म पिता के बारे में और अधिक जानने को उत्सुक हो उठता है।
मैं कहाँ हूँ?
धीरे से, वह गुफा के बाहर खिसक आता है और जंगल में कदम रखता है।
तुम इस सब से क्या करते हो?
जैसे ही वह अपने घोड़े को प्यार से थपथपाता है, उसे कुछ सुनाई देता है।
यह एक गाना है जो सपनों के वादे करता है।

जैसे ही सूर्य की पहली किरणें जंगल में प्रवेश करती है आर्य की आँखों के सामने संसार अंधकारमय होने लगता है।
आर्य बेहोशी की हालत में देखता है मानों काली आकृतियाँ उसकी आँखों को चिढ़ा रही हों। कोई बिखरे हुए बच्चे चाहता है...
आह! क्या हुआ? कहाँ है मेरा...
तब तक धर्म पिता नदी से गुफा की ओर लौट रहे थे।
आह ! सभी प्राणियों के धर्म पिता...

...और अकेले मेरे पिता!
तुम मेरे पुत्र नहीं हो।
तुम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि मेरी शरीर में तुम्हारा खून है!
ज़िंदगी मात्र रक्त संबंध नहीं है, प्रभात!
यह मेरा नाम नहीं है!

तब तक...
मेरा घोड़ा कहाँ गया?
बच्चे कहाँ हैं?
मैं यह कैसे होने दे सकता हूँ!
यह सब धर्म पिता के कारनामे हो सकते हैं....
अंधकार विश्वास की परछाँई है। मैंने बूढ़े आदमी पर ज़्यादा ही जल्दी विश्वास कर लिया।
आगे है

युद्धकाण्ड-१३

राम ने हनुमान को बुलाकर कहा, ''हनुमान तुम राक्षस राज विभीषण की अनुमति लेकर लंका में सीता के पास जाओ और उनसे कहो कि मैं, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि सुख से हैं तथा रावण मेरे हाथों मार दिया गया है। मालूम करो कि वह कैसी हैं...''

हनुमान रावण के महल में घुसे। वहाँ एक पेड़ के नीचे राक्षस स्त्रियों के बीच घिरी बैठी दुःखी सीता को देखा। हनुमान अपना परिचय देकर विनम्रता से खड़े हो गए। अश्रुपूरित आँखों से सीता पहले हनुमान को पहचान नहीं पायीं। पर जब पहचाना तो विकल हो कर अश्रु बहाने लगीं। हनुमान से उन्हें अभिवादन करके कहा, ''माता! सुग्रीव और लक्ष्मण के साथ श्री राम पूरी तरह सुरक्षित हैं। विभीषण तथा वानरों की मदद से उन्होंने शत्रु का नाश कर दिया है। अब भय की कोई बात नहीं लंकाधिपति विभीषण आप से भेंट करने आ रहे हैं। मुझे आप को सब समाचार देने हेतु श्री राम ने ही यहाँ भेजा है।''

यह सुन सीता बेहद प्रसन्न हुईं कि तुरंत कुछ बोल ही न सकीं। ''आप क्या सोच रही हैं? माता! राम के लिए आपका क्या संदेश है।''

हनुमान के यह पूछने पर सीता थोड़ा सँभलीं और कहा, ''यह खुशी सुन कर मैं निःशब्द सी हो गई। मुख से बोल ही नहीं निकल रहे हैं। तुम्हारी कैसे प्रशंसा करूँ मुझे तो यह भी नहीं सूझ रहा है। हर्ष की इस बेला में तुम्हें क्या उपहार दूँ? तुम्हारे लायक चीज़ तो तीनों लोकों में ढूँढ़ने से भी नहीं मिल सकेगी।''

To walk चलना ᱚᱥᱚᱨ Santali तालाम

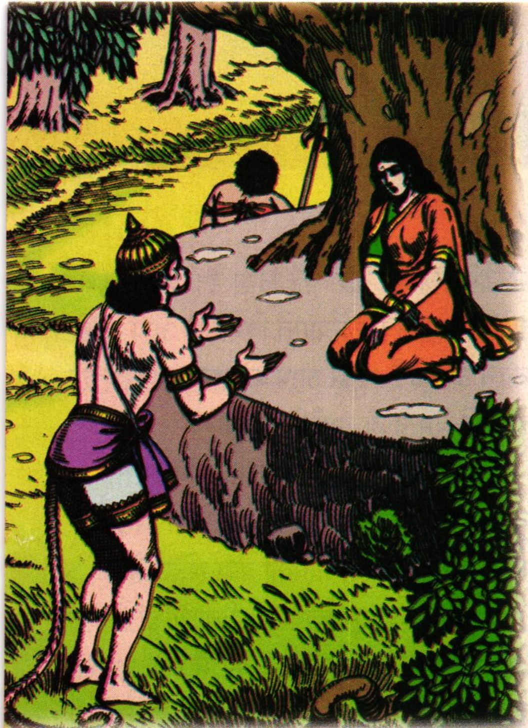

''माता! अब आप मुझे आज्ञा दें कि मैं स्वामी के समक्ष क्या निवेदन करूँ।'' हनुमान ने कहा।

''मैं अपने स्वामी के दर्शनों के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहती। श्री राम को देख कर ही मेरे प्राण जी उठेंगे। बस मात्र इतनी ही विनती है।'' सीता ने अत्यंत द्रवित होते हुए कहा।

''माता! अब अधीर न होवें। बस उनके दर्शन हेतु कुछ पल ही बाकी हैं धैर्य रखें।'' कह कर हनुमान विद्युत गति से श्री राम के पास पहुँचे और उनसे बोले, ''आप की युद्ध में विजय हुई यह जानकर वे अति प्रसन्न हुईं। पर बिना आपके दर्शन वे बहुत दुःखी हैं। आपको देखने के लिए वे अत्यातुर हो रही हैं।''

श्री राम अति भावुक हो उठे। उनके नेत्रों से अश्रु बह निकले। साथ ही एक बार फिर उनके हृदय में सीता प्रेम तथा लोकाचार के मध्य द्वंद्व शुरू हो गया।

उन्होंने विभीषण की ओर मुड़कर कहा, ''तुम सीता के स्नान, द्रव्य लेपन तथा श्रृंगार आदि का प्रबंध करवाओ। तत्पश्चात् उसे यहाँ ले आओ।''

विभीषण ने स्त्रियों द्वारा यह संदेश सीता तक पहुँचाया। इस पर सीता ने मन की वेदना को दबाते हुए श्री राम दर्शन से पहले स्नान आदि का निश्चय किया। स्त्रियों ने स्नान करा कर सीता के शरीर पर सुगंधित द्रव्य लगाए व उत्तम वस्त्र पहनाए। तत्पश्चात् एक सुन्दर पालकी में बिठा कर बहुत सी स्त्रियों के साथ विभीषण उन्हें श्री राम के पास लेकर आए।

राम इसी दुविधा में थे कि सीता को कैसे त्यजा जाए या कैसे स्वीकार किया जाए। पर ज्यों ही विभीषण ने आकर बताया कि सीता आ गई हैं तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए। सीता दर्शन के विचार ने ही उन्हें परमानंद से छलका दिया। उन्होंने विभीषण से सीता को ले आने के लिए कहा।

विभीषण की आज्ञा पर सैनिक वानरों को दूर हटाने लगे। इसपर श्री राम ने विभीषण से कहा, ''इन सब को क्यों भगा रहे हो? ये सब मेरे अपने हैं पराए नहीं। ये वानर उन्हें माता समान आदर देते हैं। जिनके लिए ये सब अपने प्राणों तक को न्योछावर करने को तैयार हो गए अब इन सब को उन्हें देख लेने दो।''

To walk चलना चलितुम् Sanskrit चलितुम

विभीषण जाकर, सीता को आदर सहित राम के पास ले आए। सीता शर्माती, लज्जाती राम के सम्मुख आयीं तथा पीछे-पीछे विभीषण आकर खड़े हो गए। इतने पुरुषों के मध्य स्वयं को देखकर उन्होंने आँचल थोड़ा नीचे खींच लिया तथा एकटक श्री राम को निहारने लगीं।

राम के चेहरे पर सीता के प्रति आए भावों ने लोगों को उद्वेलित कर दिया। वे समझ नहीं पाए कि श्री राम के हृदयगत मनोभाव एक वियोगी के प्रेम के स्थान पर अति कठोर क्यों दिख रहे हैं।

राम ने सीता से अति कठोर स्वर में कहा, "सीता, जो एक पराक्रमी पुरुष का कर्तव्य था वह मैंने किया। शत्रु को मार कर मैंने तुम्हें प्राप्त किया। शत्रु ने जो मेरा अपमान किया मैंने उसका प्रतिकार लिया। मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। परंतु यह सब मैंने तुम्हारे लिए नहीं किया। मेरे वंश पर जो कलंक रावण ने लगाया था उसे हटाने के लिए किया परंतु जो स्त्री बहुत समय से परपुरुष के घर में रही हो उसे कोई भी स्वाभिमानी पुरुष ग्रहण नहीं कर सकता। अब तुम वहाँ जाओ जहाँ तुम्हारा भरण-पोषण हो सके। वहाँ जहाँ तुम समझती हो कि तुम सुखी रह सकोगी, वहाँ रहो।"

इतने दिनों के वियोग के पश्चात् पति मिलन इतना वेदनापूर्ण होगा यह उन्होंने नहीं सोचा था। श्री राम की श्रृंगार करके आने की आज्ञा जान कर मीठे स्वप्न में खोईं वे अति प्रसन्न थीं। पर श्री राम के अपमानजनक वचन सुनकर वे दुःख एवं क्रोध से तिलमिला उठीं। उनका मन राम वियोग

में भी इतना दुःखी नहीं हुआ था जितना उनके मिलन से दुःखित हो उठा।

सीता इन लज्जाजनक बातों से दग्ध होकर शान्त न रह सकीं और बोलीं, "वीर पुरुष होकर अज्ञानियों की भाँति क्यों ऐसे वचन कह रहे हो? मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे मेरे तथा तुम्हारे कुल का सर नीचा हो। इतने दिनों के साहचर्य से भी तुम मेरा स्वभाव एवं मन न जान सके, तो अब जान भी न पाओगे। जब तुमने हनुमान को मेरी खोज में भेजा था तभी बता दिया होता कि मैं परित्यक्ता हूँ तो तभी आत्मघात कर लेती। तुम्हें तथा तुम्हारे मित्रों को कष्ट न हुआ होता और न ही इतनी राक्षस स्त्रियों को विधवा होने की वेदना सहनी पड़ती। मैं स्वेच्छा से रावण

To eat	खाना	తినడానికి	Telugu	तिनडानिकि

के साथ नहीं आई। इतने पर भी यदि तुम्हारे मन में संदेह है तो हमारा मिलन किसी प्रकार भी संभव नहीं।''

सीता ने कुछ क्षण रुककर वेदनापूर्ण श्वास ली फिर लक्ष्मण की ओर उन्मुख होकर बोलीं, ''लक्ष्मण, ये बातें जानकर मेरी इस जीवन को जीने की कोई अभिलाषा नहीं है। चिता तैयार करो। अग्नि के समक्ष ली गई प्रतिज्ञा यदि सूर्यवंशी निभा नहीं सके तो उनसे जुड़ कर या उनके घर रहने का कोई तात्पर्य नहीं। मैंने अग्नि के समक्ष की हुई अपनी प्रतिज्ञा का कभी निरादर नहीं किया तथा अति कठोर परिस्थिति में भी मन, वचन, कर्म से पति श्री राम के अतिरिक्त किसी अन्य के बारे में नहीं सोचा। अतः अब मैं स्वयं को अग्नि को ही समर्पित कर दूँगी। मेरे सामने अब दूसरा कोई रास्ता या अभिलाषा नहीं।''

लक्ष्मण ने राम की ओर देखा। वे अति आश्चर्य में डूब गए। उन्हें सीता के अग्नि प्रवेश से कोई आपत्ति न थी। वे व्यथित हो उठे। उन्होंने फिर आशान्वित होकर राम की ओर देखा। पर राम की कठोर नज़रों को देख वे चिता की व्यवस्था करने लगे। कार्य पूर्ण होने तक सीता चिता की ओर देखती रहीं मानो कह रही हों कि उनके हृदयानल की वेदना चिताग्नि से ही शान्त हो सकेगी। सिर झुकाकर सबसे पहले उन्होंने राम की प्रदक्षिणा की, फिर सभी देवताओं तथा ब्राह्मणों को प्रणाम किया। धीमे-धीमे वे चिता के सम्मुख आईं, फिर बोलीं, ''मैंने राम के सिवाय यदि किसी और के बारे में न सोचा हो, यदि राम का सन्देह गलत हो, यदि मैंने मनसा, वाचा, कर्मणा, अपने धर्म का पालन करते हुए राम की आज्ञा का उल्लंघन न किया हो, तो सर्वज्ञ अग्नि देव मेरी रक्षा करें-मेरी रक्षा करें-मेरी रक्षा करे।'' ऐसा कहते हुए अग्नि की प्रदक्षिणा करके उसमें प्रवेश किया।

यह देख सभी वानर और राक्षस हाहाकार कर उठे। श्री राम भी उस दृश्य को देख कर स्वयं को रोक न सके। उनके अंदर की कठोरता दिखाने भर को थी। उनको रोता देख लक्ष्मण समझ गए कि लोकाचार के वशीभूत होकर उन्होंने सीता से कठोर व्यवहार किया था। उसी समय सभी देव अपने प्रकाशवान विमानों में नीचे उतर आए।

To eat	खाना	சாப்பிட	Tamil	साप्पिड

"मैं दशरथ पुत्र होकर क्यों पैदा हुआ ब्रह्मा जी, यह आप ही कहें। मुझे ही इस वेदना के लिए क्यों चुना गया? क्यों मुझे अपने जीते जी अपनी प्राण प्रिय पत्नी का त्याग करना पड़ा है?" कहते हुए राम विकल होकर भूमि पर गिर पड़े।

"तुम साक्षात् नारायण हो। सीता लक्ष्मी है रावण के संहार हेतु तुमने भूलोक में मानव जन्म लिया है। रावण वध हो चुका है। अब तुम वैकुण्ठ पधारो।" ब्रह्मा ने अति स्नेह से कहा। ब्रह्मा के इतना कहते ही अग्नि देव सीता के साथ अग्नि से प्रकट हुए।

अग्नि ने सीता को राम के पास लाकर कहा, "यह लो, अपनी सीता। यह पूर्णतया निर्दोष है। इसने कोई पाप नहीं किया। इसका मन तुमसे विचलित होकर क्षणमात्र के लिए भी किसी और पर नहीं लगा। इसलिए इसे ग्रहण करो यह मेरी आज्ञा है।"

"मैं जानता हूँ कि सीता ने कोई पाप नहीं किया। परंतु सदाचार का ख्याल करते हुए, उसको अग्नि में प्रवेश करते हुए देख चुप रहना पड़ा। नहीं तो संसार मुझे कामान्ध ही कहता। अग्नि से भी पवित्र व ज्वलंत सीता का अन्यथा रावण क्या बिगाड़ सकता था। अब यह तीनों लोकों में स्पष्ट हो गया है कि सीता निर्दोष है। अतः मैं उसे ग्रहण करता हूँ।"

तब महेश्वर शिव बोले, "राम स्वर्ग से तुम्हारे पिता विमान में आए हैं।"

विमान में आए हुए दशरथ को देख कर राम

लक्ष्मण ने उन्हें नमस्कार किया। दशरथ ने उन्हें पास बुलाकर गले लगाया और कहा, "बेटा, तुम्हारे वनवास और कैकेयी की बातें मुझे चुभ रही थीं। परन्तु अब मुझे मालूम हुआ कि देवताओं ने ही तुम्हारे राज्याभिषेक में मंथरा व कैकेयी को दुर्बुद्धि दे कर विघ्न पहुँचाया था, ताकि रावण का संहार हो सके। तुम्हारी तीनों माताएँ तुम्हें देख कर अति प्रसन्न होंगी। तुम किसी के लिए भी मन में संताप न करना।" फिर उन्होंने लक्ष्मण तथा सीता को भी आशीर्वाद दिया।

दशरथ के स्वर्ग वापस जाने के बाद इन्द्र ने राम की स्तुति की तथा कोई वर माँगने को कहा। तब श्री राम ने कहा जो वानर भालू युद्ध में लड़ते हुए मारे गए हैं उन सबको पुनः जीवित कर दिया

To eat	खाना	খাওয়া	Bengali	खावोवा

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी नवम्बर २००९ के उत्तर : A
विजेता : प्रेम चन्द्रा, वाराणसी, यू.पी.

जाए। इन्द्र ने वैसा ही किया। पुनः जीवित हुए वानर उठ कर हैरान हो गए मानो नींद से जागे हों। फिर सभी देवता चले गए।

श्री राम उस रात सुख से सोए। अगले दिन सवेरे विभीषण को बुला कर कहा, ''मेरे भाई भरत ने शपथ ली थी कि यदि चौदह वर्ष का समय पूर्ण होते ही वापस न पहुँचा तो वह प्राण त्याग देगा। उसने जो कहा है, वह करके रहेगा। तुम कृपा करके बस एक कार्य शीघ्रातिशीघ्र करो। मेरे जल्द से जल्द अयोध्या पहुँचने की व्यवस्था करो।'' श्री राम ने भावावेश में अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा।

''मैं जानता हूँ प्रभु। इसी कारणवश मैं भाई कुबेर को दिया हुआ पुष्पक उनसे लेकर आपके लिए रख लिया है। आप सपरिवार एक दिन में ही आकाश मार्ग से अयोध्या पहुँच जाएँगे।'' विभीषण ने कहा।

क्या आप जानते हैं?

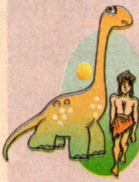

पृथ्वी पर कोई भी प्रजाति ५० लाख वर्षों से अधिक नहीं जीवित रहती!

हाथियों के पूर्वज, मैमथ के दाँत तकरीबन १६ फीट लंबे होते थे।

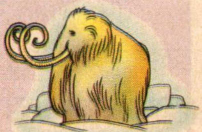

प्राचीन यूनान में गुलाम नमक से तौले जाते थे क्योंकि नमक एक मंहगी वस्तु थी!

''तुम्हारी भक्ति भावना मुझे प्रेम मग्न कर रही है परंतु मेरा मन भरत, शत्रुघ्न, माताओं तथा सभी परिजनों को देखने के लिए व्याकुल हो रहा है। मेरा वनवास पूरा हो गया है। भरत ने बड़ी व्याकुलता से प्रतीक्षा की है। पुष्पक विमान देकर जो तुमने मुझ पर उपकार किया, यह मेरे लिए किसी भी अन्य वस्तु से अधिक मूल्यवान है।'' कह कर श्री राम मुस्कुराने लगे।

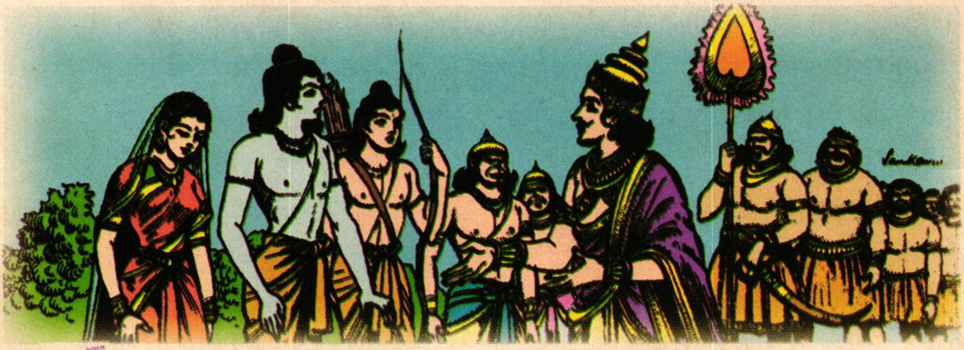

To eat | खाना | खाण | Marathi | खाणे

मित्र भेद-२

करटक के मुँह से बंदर की कहानी सुन कर दमनक ने कहा:

"भाई, जो लोग केवल अपने ही स्वार्थ का ख़्याल रखते हुए किसी न किसी प्रकार अपने पेट भरते हैं, वे कभी भी ऊपर उठ नहीं सकते; सिर्फ़ पेट भरने मात्र से उत्तम जीवन उपलब्ध नहीं होता। आखिर कौआ भी जो चीज़ अपनी चोंच को मिली, उसे खाकर पेट भर लेता है। जिसका जीवन अपने मित्रों, गुरुजनों, सेवकों तथा विपत्ति में पड़े लोगों के लिए काम नहीं देता, वह जीवन क्या है? एक हड्डी मिल जाए तो पेट न भरने पर भी कुत्ता संतुष्ट हो जाता है। पर हाथी की बात ऐसी नहीं; वह स्वाभिमान रखता है! बहुत कम गिड़गिड़ाने के बाद ही वह कुछ खाता है। सिंह अपने पंजे में आए हुए गीदड़ पर झपट कर उसे नहीं खाता। वह मदमत्त हाथी पर ही वार करता है। अन्य प्राणियों को मारने में भी प्रकृति का अपना धर्म होता है। ऐसी हालत में जीवन का भी तो अपना धर्म होगा! छोटा गड्ढा शीघ्र भरता है, इसी प्रकार हीन व्यक्ति भी थोड़ी-सी आमदनी से संतुष्ट हो जाते हैं। पर सभ्यता को प्राप्त किए बिना, पशु-प्रवृत्ति से संतुष्ट होने पर भी, मानव मात्र मानव-पशु के रूप में रह जाते हैं, मगर उनमें और जानवरों में अंतर ही क्या है?"

"मगर इसमें हमारे कर्तव्य का प्रश्न ही कहाँ उठता है? हम सिंह के अधीन तो काम नहीं करते हैं न?" करटक ने पूछा।

"पगले, पद और नौकरियाँ आज रहेंगी, कल छूट जाएँगी, पर कर्तव्य तो हमेशा रहता ही है। योग्य व्यक्तियों के लिए पद के मौके सदा बने रहते हैं, अयोग्य व्यक्ति ही शीघ्र अपने पद खो बैठते हैं। हमारी योग्यताओं के अनुरूप ही हमारे क्रिया-कलापों के लिए आदर और अनादर प्राप्त होते हैं। विशाल पत्थर को पहाड़ पर पहुँचाना

To eat | खाना | ತಿನ್ನಲು | Kannada | तिन्नलु

बड़ा कठिन है, पर नीचे गिराना बहुत ही आसान है। इसी प्रकार आदर और प्रतिष्ठा प्राप्त करना कठिन कार्य है। केवल पेट भरने वाले मूर्ख बने रहने के लिए किसी प्रकार का श्रम करने की आवश्यकता नहीं।'' दमनक ने समझाया।

''अच्छी बात है! यह बताओ, आखिर तुम्हारा उद्देश्य क्या है? हमारे शासक सिंह से तुम क्या पूछना चाहते हो?'' करटक ने प्रश्न किया।

''मुझे लगता है कि हमारे शासक किसी बात को देख कर डरे हुए से लगते हैं। उनके भय को देख कर उनके सेवक अन्य जानवर भी डर गए हैं। हमारे शासक को कुछ सूझता नहीं लगता है।'' दमनक ने अपना संदेह प्रकट किया।

''सिंह के पास जाकर यह कहना ख़तरे से खाली नहीं है कि तुम डर गए हो। इसलिए मेरी सलाह मानो तुम इस झमेले में मत पड़ो।'' करटक ने सलाह दी।

''जो साहसी होते हैं, उन्हें ख़तरे का डर नहीं होता। राजा के लिए जो हित की बात होती है, उसे कहना तो प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होता है। अलावा इसके जो लोग राजा की प्रशंसा प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें पहले राजा के साथ मेल-जोल बढ़ाना होगा।'' दमनक ने समझाया।

''अच्छी बात है! पर सावधान रहो! हम दोनों की किस्मत तुम्हारी विजय पर निर्भर है।'' करटक ने उत्तर दिया। इस पर दमनक अपने बड़े भाई को प्रणाम कर के पिंगलक के पास जा पहुँचा।

पिंगलक ने दमनक को देख अपने अनुचरों से कहा, ''उसे मेरे पास आने दो वह मेरे पुराने सेवक का पुत्र है!'' दमनक पिंगलक के पास आया, उसे नमस्कार करक बैठ गया।

''तुम कुशल हो न? आज तक तुम मुझे दिखाई नहीं दिए? आज तुम्हारे आने का क्या प्रयोजन है?'' पिंगलक ने पूछा।

''आप भले ही न बुलाएँ, पर आपकी सेवा में पहुँचना मेरा कर्तव्य है। मुझ जैसे क्षुद्र व्यक्ति के द्वारा भी आप का प्रयोजन होता है। हम पीढ़ियों से आपकी सेवा करते आ रहे हैं, इसलिए आपके सुख और दुःख के समय भी आप का साथ देना हमारा धर्म है। आपने पूछा - मुझे देखने आज तक क्यों नहीं आए? क्या आपने मुझे अपने मंत्रि-मंडल में स्थान दिया? क्या मंत्रणा के लिए

To eat	खाना	ଖାଇବା	Oriya	खाइबा

बुलाया? सेवकों में कौन योग्य हैं और कौन अयोग्य हैं, यह बात मालिक जब तक समझ नहीं पाते हैं, तब तक वे दूर ही रह जाते हैं। वास्तव में सेवकों का स्वभाव अपने मालिक के द्वारा उन्हें काम में लाने की रीति के अनुकूल भी होता है। घोड़ा, पुस्तक, तलवार, औरत, वाद्य और वचन का मूल्य इन्हें काम में लाने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करता है!'' दमनक ने कहा।

''लोमड़, आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?'' पिंगलक ने पूछा।

''मैं लोमड़ हूँ, यह मानकर आप मुझे तुच्छ न समझिए! उत्तम जाति का रेशम भी कीड़ों से ही मिलता है पत्थर में से सोना निकलता है। लकड़ी से आग पैदा होती है! इसलिए जन्म धारण में बड़ी बात नहीं, सर्वथा गुण ही प्रधान महत्त्व रखता है! इसलिए आप मुझे नीचा मत मानिए! मैं आपका विश्वासपात्र सेवक हूँ।'' दमनक ने कहा।

''क्या मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानता? आज तुम्हारे आगमन का क्या कारण है?'' पिंगलक ने पूछा। ''महाराज! सेवक का कर्तव्य हमेशा मालिक की सेवा में तत्पर रहना है। मैं तो कहता हूँ, महाराज, सेवक को इतना तत्पर रहना चाहिए कि अपने मालिक की मुख मुद्रा से उसकी आवश्यकता को महसूस करके अपने स्वामी की सेवा में संलग्न हो सके। स्वयं मुझे भी इसी प्रकार आपके मुख-दर्शन मात्र से आपकी थकान व प्यास का आभास हो गया तथा फिर मैंने देख कि आप पानी पीने नदी के पास गए और बिना

To eat	खाना	ખાવું	Gujarati	खावुं

पिए तुरंत ही लौट आए? अतः मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई कि मेरे स्वामी, आप भयाक्रान्त हैं या अन्य किसी तकलीफ से आपने पानी नहीं पीया। बस मैं यही जानने के लिए उत्सुक हूँ।'' दमनक ने पूछा।

पिंगलक ने सोचा कि अपने भय की बात इसके सामने प्रकट करना उचित नहीं है, इसलिए बोला, ''इसका कोई ख़ास कारण नहीं है, मुझे पानी पीने की इच्छा नहीं हुई, बस इसीलिए नहीं पीया।''

''ऐसी बात हो जो प्रकट नहीं की जा सकती हो तो छोड़ दीजिए। सब बातें सभी के सामने नहीं की जा सकती हैं।'' दमनक ने जवाब दिया।

दमनक की कुशाग्र बुद्धि पर पिंगलक का विश्वास जम गया और बोला, ''हमारे जंगल में एक भयानक जानवर आ गया है। उसकी रंभाहट ही इतनी भयानक है तो वह स्वंय कितना भयंकर होगा। इसलिए मैं यह जंगल छोड़ना चाहता हूँ।''

''क्या महाराज, ध्वनि सुनकर ही आप डर गए? आपके पुरखों ने बड़े ही श्रम के साथ जंगल के इस राज्य पर आधिपत्य जमाया है, इसे यूँ ही छोड़ देना न्याय संगत है क्या? बिजली के गिरने की ध्वनि को सुनते हैं, तूफ़ान की आवाज़ सुनते हैं, लेकिन ये ध्वनियाँ हमारी कोई हानि नहीं करतीं। आप उस रंभाहट की परवाह न कीजिए। क्या आपने रण दुंदुभी की कहानी नहीं सुनी?'' दमनक ने पूछा।

''वह कहानी क्या है?'' पिंगलक ने पूछा।

दमनक ने बताया। एक भूखी लोमड़ी आहार की खोज में युद्ध भूमि पहुँची। वहाँ उसे एक भयंकर ध्वनि सुनाई दी। वह डर गई। उसने आवाज़ की दिशा में खोज प्रारंभ की, आखिर उसने देखा कि एक रण दुंदुभी पेड़ की डाल में बंधी हुई है। हवा के कारण हिलकर शाखाएँ उसे मार रही थीं जिससे ध्वनि निकल रही थी। लोमड़ी ने सोचा उसमें माँस भरा होगा। उसे एक ओर से काटा, उसमें छेद बनाया, मगर उस दुंदुभी में चमड़े के सिवाय उसे कुछ न दिखाई दिया।

दमनक ने पिंगलक को यह कहानी सुनाकर कहा, ''इसलिए ध्वनियों के आधार पर कुछ निर्णय नहीं लिया जा सकता। ***(आगे है)***

To eat | खाना | खावटेल | Assamese | खाबलै

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

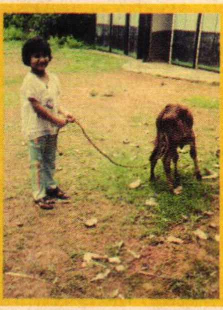

LAKSHMI KIRANA

B. SUNDARI

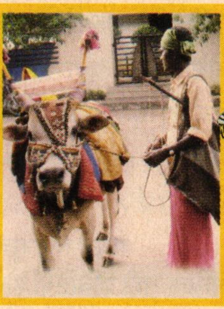

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

गरिमा शर्मा
डी-७१३, मालवीय नगर
जयपुर, पिन - ३०२ ०१७
राजस्थान

विजयी प्रविष्टि

सूटकेस बिन सफ़र अधूरा ।
बंदर बिन खेल अधूरा ॥

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१० नवम्बर २००९ उत्तर:

१. १९६४ में नेहरू जी की मृत्यु के पश्चात्; २. जब वे जम्मू और कश्मीर से दिल्ली आए तो कौल परिवार एक नहर के किनारे रहता था। इसलिए नेहरू नाम पड़ा; ३. १९१९; ४. १७ वर्ष तक; ५. संसार के इतिहास की झलकियाँ, आज़ादी की ओर, भारत एक खोज; ६. गुलाब।

विजेता : हिमेश देवगन, यमुना नगर, हरयाणा।

To eat	खाना	തിന്നുക	Malayalam	तिन्नुक

तेज़ फार्मूला

इस महीन का प्रश्नः

एक जादूगर के पास उसके संदूक में ३४ नीले फीते, २९ लाल फीते तथा २९ हरे फीते हैं। एक विशिष्ट जादूई चाल के लिए संदूक में से फीता सांयोगिक रूप से चुना जाता है। इसे दोबारा स्थान पर रखने के बाद दूसरा फीता चुना जाता है। उसके द्वारा नीला तथा हरा फीता चुनने की संभाव्यता (प्रोबेबिलिटी) क्या है?

नोटः इसका हल मार्च'१० महीने के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ सूत्र देने वाले को ५००/- रुपए का इनाम मिलेगा।

एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपए दिए जाएँगे।

अपने प्रवेश फार्म ३० जनवरी के पहले इस पते पर भेजेंः

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093 or e-mail your entries to:contests@chandamama.com

---

यहाँ प्रस्तुत है नवंबर'०९ महीने की समस्या को चहल करने का सही तरीकाः

क्या आपने जून की कारों की समस्या का हल निकालने की कोशिश की थी? यद्यपि प्रश्न में बहुत बड़ी संख्या थी परंतु उत्तर आश्चर्यजनक रूप से छोटा था। यहाँ इसे हल करने के लिए आपके मार्गदर्शन हेतु सबसे आसान तरीका दिया हैः

माना कि नीली कारों की संख्या=x

स्लेटी कारों की संख्या=y

उत्तरी क्षेत्र में=१९५५x - २४८२=४७६y

या १९५५ x - ४७६y = २४८२

दक्षिणी क्षेत्र में y

४७६x + ४९१३=१९५५y या

४७६x -१९५५y =-४९१३.

अगर आप इन दोनों समीकरणों को ध्यान से देखेंतो तो पता चलता है कि समीकरण एक का x और y का गुणांक, समीकरण दो के x और y के गुणांक से आपस में बदले हुए हैं। जब भी आपके पास इस समास्या की भाँति समीकरण हों तो x और y को जल्दी से हल करने के लिए नीचे लिखे स्टैप्स पर चलिए।

स्टैप १: दो समीकरणों को जोड़िएः

१९५५x-४७६y+४७६x-१९५५y=२४८२-४९१३

२४३१x-२४३१y = -२४३१

x-y=-१

स्टैप २: दो समीकरणों को घटाइएः

१९५५x-४७६y-४७६x+१९५५y=२४८२+४९१३

१४७९x+१४७९y=७३९५.

x+y =५.

यह जाँच की जाने वाली कारों की कुल संख्या है। आप अपने अंतिम उत्तर हेतु यहीं समाप्त कर सकते हैं लेकिन अगर आप x और y का समाधान चाहते हैं तो अगली प्रक्रिया अपनाइए।

स्टैप ३: स्टैप १ तथा स्टैप २ के परिणामों को जोड़िए।

x-y+x+y= - १+५

२x = ४ या x=२

इसलिए, y = ३

नवम्बर'०९ प्रतियोगिता के विजेता हैं

जे.जी. अंजनादेवी, बंगलोर;

शाना मेहता, अजमेर, राजस्थान।

To eat | **खाना** | ᱡᱚᱢ | **Santali** | **जोम**

यूरेका

एक आइस्क्रीम की दावत !

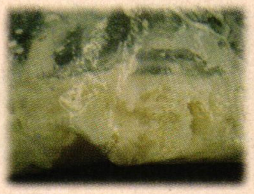

अपनी खुद की एक आइस्क्रीम बनाने से अधिक मज़ेदार क्या हो सकता है? एक सरल और स्वादिष्ट प्रयोग खुद करके देखने के लिए!

आपको क्या चाहिएः

- सेंधा नमक/ टेबल साल्ट
- क्रीम मिल्क
- पिसी चीनी, सुगंधित अर्क
- ज़िपलॉक बैग, प्लास्टिक मर्तबान, कुटी हुई बर्फ

कैसे बनाएँः

- एक कप क्रीम मिल्क (क्रीम अधिक हो तो अच्छा है), एक चौथाई कप चीनी और एक चाय का चम्मच सुगंधित अर्क।
- सब को अच्छी तरह मिलाएँ और एक ज़िपलॉक बैग में उड़ेल दें और ध्यान रखें कि इसकी सील अच्छे से लगी हो। (बहुत महत्त्वपूर्ण कदम!)
- एक प्लास्टिक जार लीजिए और उसमें कुटी हुई बर्फ भर दें इसमें एक मुट्ठी नमक डालें और कुछ क्षण अच्छी तरह मिलाएँ।
- आइस्क्रीम मिश्रण वाले ज़िपलॉक बैग को जार में डालिए।
- जार को फर्श पर दस से पंद्रह मिनट ज़मीन पर लुढ़काइए।
- या फिर इसकी जगह आप एक बड़ा बर्फ और नमक भरा ज़िपलॉक बैग ले सकते हैं।
- इसमें आइस्क्रीम मिश्रण वाला ज़िपलॉक बैग रखें और इसे दस मिनट तक अपने हाथों से अच्छी तरह गूँथे। (दस्ताने का प्रयोग करें)
- बैग को बाहर निकालें, इसे धोएँ तथा अपनी आइस्क्रीम का मज़ा लें। नए तरीके आजमाएँ और देखें कि कौन सी स्वाद में सबसे मज़ेदार है।

अवधारणाः

जब बर्फ में नमक मिल जाता है तो यह जमाव बिंदु को और नीचे ले जाता है, इसलिए बर्फ पिघलने के लिए वातावरण से और अधिक ताप की आवश्यकता होती है। साधारण तरीके से रखी गई बर्फ और अधिक ठंडी हो जाती है तथा आइस्क्रीम मिश्रण को ज़्यादा जल्दी जमा देती है!

To eat खाना खादितुम् Sanskrit खादितुम

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१२

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

***यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना चाहियेः

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१२** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३० जनवरी तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर मार्च २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

गणतंत्र दिवस

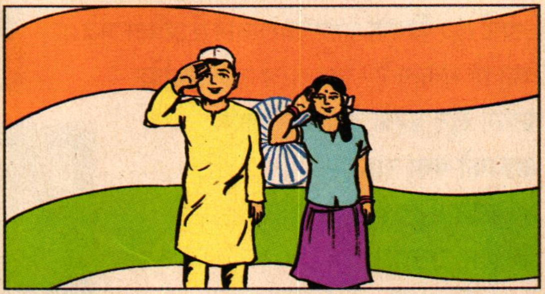

१. सैनिक विद्रोह किस वर्ष घटित हुआ?

२. स्वराज्य आंदोलन की शुरूआत किसने की?

३. लोकमान्य तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम में रत भारतवासियों के प्रवक्ता के रूप में किस समाचार पत्र का प्रारंभ किया?

४. भारत के संविधान का मूलभूत ढाँचा किसने तैयार किया?

५. अगस्त में महात्मा गान्धी जी किस प्रसिद्ध आंदोलन का प्रवर्तन किया?

६. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्माण में कौन सा ब्रिटिश व्यक्ति प्रमुख घटक था?

७. स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?

८. हमारे ध्वज के अशोक चक्र में कितनी तीलियाँ हैं?

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें।

To sing — **गाना** — **పాడడానికి** — **Telugu** — **पाडडानिकि**

मानव भगवान

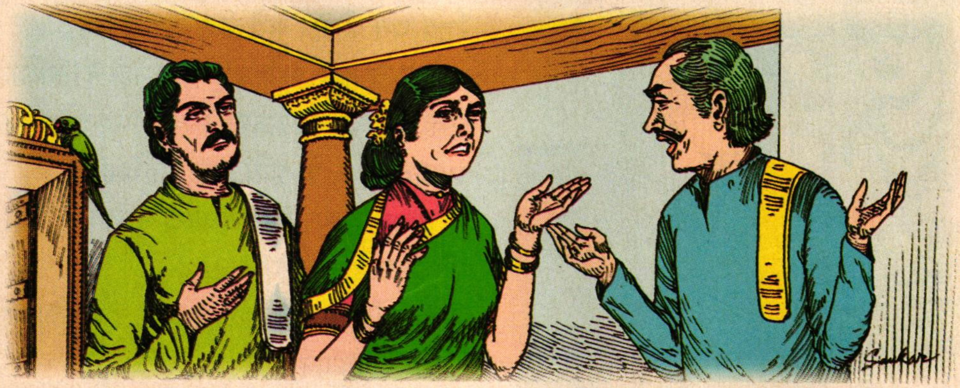

आलोक लंबे अर्से के बाद बड़ी बहन शान्ता के घर आया। वह बहुत खुश हुई। उसने अपने भाई से कहा, ''अभी हाल ही मैं सोच रही थी कि कितने दिन हुए तुमसे मिले अगर यहाँ आओगे तो कितना अच्छा लगेगा।''

बहन के स्वर में आतुरता देख कर वह समझ गया कि अवश्य ही कोई विशेष कारण होगा। परंतु अपने संदेह को बिना प्रकट किए कहा, ''मैं भी बहुत दिनों से यहाँ आने की कोशिश में था पर आवश्यक कार्यों में लगे रहने की वजह से आ नहीं सका। सब कुशल से तो है न?''

फिर इधर-उधर की बातें करने लगा। कुछ देर बाद आलोक ने शान्ता से पूछा, ''घर में सभी दिखाई दे रहे हैं। पर राजा दिखाई नहीं दे रहा है। कहीं गया है क्या?''

''वह कहीं नहीं गया। कहीं जाता भी नहीं है। शाम होते ही पूजा घर में प्रवेश कर जाता है और घंटों पूजा में लगा रहता है। किसी ने उससे कहा है कि हर समस्या का हल भगवान ही करते हैं। तब से लेकर वह इसी पूजा में लगा रहता है। सोचती थी कि तुम आ जाओगे तो सब ठीक कर दोगे। उसे सही रास्ते पर ले आओगे।'' शान्ता ने कहा।

पास ही बैठे शान्ता के पति राम ने कहा, ''उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिल रही थी तो मैंने ही ज़मींदार से प्रार्थना की और उसे दीवान में नौकरी दिलवाई। उन्होंने शर्त रखी थी कि जब-जब उन्हें उसकी सेवाओं की आवश्यकता होगी तब-तब उसे आना होगा। पर इसने तो माना ही नहीं। जब देखो पूजा में मग्न रहता है। उसे नौकरी दिलाने के जो प्रयत्न मैंने किए थे वे सब बेकार ही गए। जब मैं पूछता हूँ कि यह सब क्या हो रहा है? ऐसा क्यों कर रहे हो तो वह कहता है कि भगवान की दया हो तो इससे भी बड़ी नौकरी मिल सकती है।''

''बहुत पढ़ा लिखा नहीं है, फिर भी धनी

To sing | गाना | பாட | Tamil | पाड

कमलनाथ अपनी बेटी की शादी इससे रचाने के लिए तैयार हो गए। परंतु इसके बारे में जानने के बाद उन्होंने बेटी का रिश्ता कहीं और कर दिया। भैया, राजा तुम्हें बहुत मानता है अतः तुम इसे सही रास्ते पर ला सकोगे।'' शान्ता ने आँसुओं को आँचल से पोंछते हुए कहा।

आलोक उनकी बातों से आश्चर्य में डूब गया। इतने में पीछे से राजा की आवाज़ आयी, ''मामाजी, आप कब आए?''

उसने रेशम की धोती पहनी हुई थी। माथे पर बड़ा सा तिलक, गले में रुद्राक्ष की माला पहन रखी थी। उसे देख कर लगता था मानो एक संन्यासी हो। अपने भान्जे को इस रूप में देख कर आलोक दंग रह गया।

मामा के चेहरे को देख कर राजा ने भाँप लिया कि उसके बारे में चर्चा हो रही थी। वह बोला, ''लगता है, माँ और पिताजी ने आपसे मेरी शिकायत की है। क्यों ठीक कहा न मैंने?''

''नहीं नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। बल्कि तुम्हें देख कर ही लगता है कि तुम्हारा झुकाव भगवद् भक्ति के प्रति कुछ अधिक ही है।'' आलोक ने कहा। राजा ने ज़ोर दे कर कहा, ''क्या आपमें भक्ति नहीं है?''

आलोक ने मुस्कुराते हुए कहा, ''हाँ, है। पर मैं मानव भगवान में विश्वास करता हूँ।''

राजा ने समझा कि मामा जी का इशारा साधु संन्यासियों की ओर है। राजा को इच्छा हुई कि मामा जी से उन साधु-संन्तों के बारे में सुने और अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे। उसने पूछा, ''मानव भगवान। वे कहाँ रहते हैं, मामा जी। क्या वे आपके गाँव में हैं?'' उत्सुकता भरे स्वर में उसने पूछा।

भान्जे की उत्सुकता का कारण आलोक समझ गया। पर उसकी उत्सुकता को बढ़ाते हुए उसने कहा, ''हाँ, वे मेरे गाँव में रहते हैं। तुम मेरे साथ चलोगे तो दिखा भी सकूँगा।''

राजा उसकी बातें सुनकर दूसरे ही दिन मामा के साथ उनके गाँव जाने के लिए निकल पड़ा। शाम को जब वे घर पहुँचे, तब बरामदे में दो आदमी आलोक का ही इंतज़ार कर रहे थे। आलोक को देखते ही उन दोनों ने उसे प्रणाम किया और कहा, ''महोदय, आपकी कृपा से इस साल फसल अच्छी हुई। भगवान राम के

To sing | गाना | गान | Bengali | गान

कल्याण के लिए एक-एक हज़ार रुपए देने आपके पास आए हैं।

आलोक ने उनसे अपने भान्जे का परिचय करवाया और ''इसमें मेरी कृपा क्यों? आप दोनों ने खूब मेहनत की और उसका अच्छा फल मिला। हवा में दीपक जला कर भगवान से प्रार्थना करें कि हे भगवान, तुम्हीं हमारे लिए सर्वस्व हो तुम्हीं ने हमारी रक्षा की तो क्या वह दीप बिना बुझे जलता रहेगा? मनुष्य को पहले मेहनत करनी चाहिए, फिर भगवान में विश्वास रखना चाहिए। बड़ों ने भी कहा था कि यत्न, प्रयत्न तदन्तर दैवयत्न में विश्वास रखना चाहिए। राम के कल्याण के लिए तो रक़म दी, पर गाँव में जिस अस्पताल का निर्माण हो रहा है, उसके लिए थोड़ी सी भी रक़म नहीं दोगे क्या?''

उसकी इस बात पर उन दोनों के चेहरे फीक़े पड़ गए। तब आलोक ने हँसते हुए कहा, ''मैं जानता हूँ। उन ग़रीबों की तुम्हें कोई चिंता नहीं, जिनके पास कुछ भी नहीं है। किन्तु राम उन्हें सहारा देते हैं, उनकी रक्षा करते हैं, भगवान राम के साथ-साथ तुम लोग भी उनकी सहायता करोगे तो समझो, अपनी तरफ से भी यह जिम्मेदारी सँभाल रहे हो। इससे भगवान राम अत्याधिक संतुष्ट होंगे। सोचो और सही निर्णय लो।''

उन दोनों ने आलोक को प्रणाम करते हुए कहा, ''आपकी बातें मोती समान मूल्यवान हैं। पर हमारे पास इससे अधिक धन नहीं है। फिर आगे आपकी इच्छा।'' कहते हुए उन्होंने रक़म आलोक को दे दी।

''कोई बात नहीं। राम के कल्याण के लिए

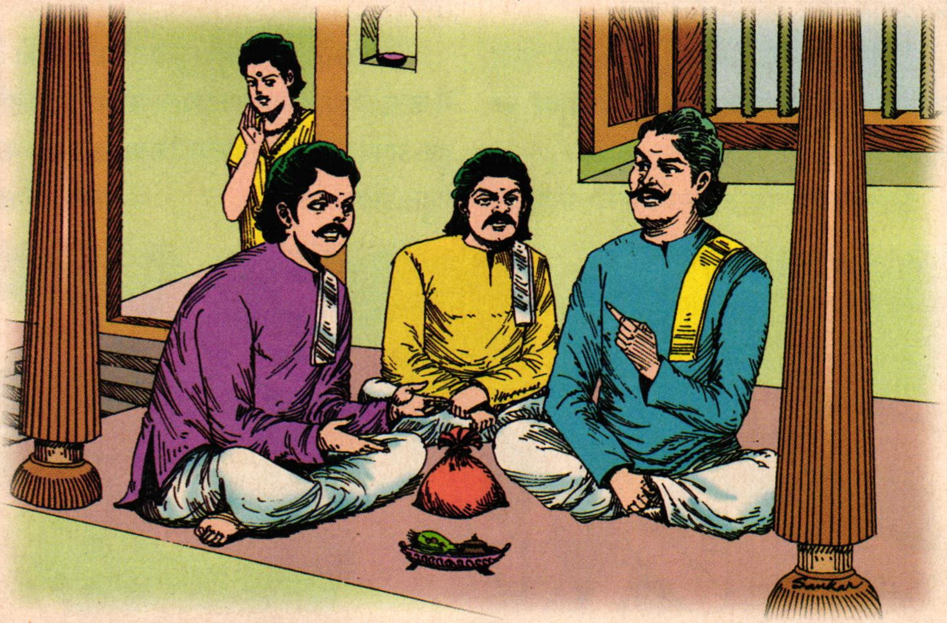

To sing	गाना	गाणे	Marathi	गाणे

अच्छी रक़म जमा हो रही है। इसमें से एक तिहाई अस्पताल के लिए लगाऊँगा।

आप दोनों श्रम दान करेंगे तो अच्छा होगा। ''वे खुश होते हुए बोले, ''साहब आपने बिल्कुल ठीक कहा। हम अवश्य श्रमदान करेंगे और अस्पताल के निर्माण कार्य में भाग लेंगे। आप महान हैं।''

उनकी इस प्रशंसा पर आलोक ने कहा, ''क्या तुम लोग समझते हो कि यह सब मेरी अक्लमंदी है? नहीं, बगल की गली में रामशास्त्री नामक महान पंडित रहते हैं। वे ही मेरे मार्गदर्शी हैं मेरे लिए वे भगवान समान हैं। हर मनुष्य में भगवान है। दूसरों के कष्टों को दूर करने वालों पर ही भगवान की सदा कृपा होती है। ये ज्ञान से भरी बातें मैंने उन्हीं से सीखी हैं और अमल में ला रहा हूँ।''

वे दोनों रामशास्त्री की याद करते हुए, आलोक को प्रणाम करके वहाँ से चले गए।

''मामाजी, कल सवेरे ही अपने गाँव चला जाऊँगा।'' राजा ने उनके जाते ही सिर झुका कर कहा।

आलोक जान गया कि उसके भान्जे पर इसका क्या प्रभाव पड़ा। उसने कहा, ''अरे! यह क्या कह रहे हो। अभी तो आए हो, अभी जाने की बात कह रहे हो?''

''नहीं मामाजी, मेरे पिताजी बूढ़े होते जा रहे हैं इसलिए मैंने दीवान में काम करने का निश्चय किया है। फिर कभी आऊँगा। आपके गाँव में जो अस्पताल बन रहा है उसमें श्रमदान भी दूँगा तथा आपके मानव भगवान श्री रामशास्त्री जी से भी मिलूँगा।'' राजा ने निर्मल मन से कहा।

भान्जे में आए इस परिवर्तन को देख कर आलोक ने खुश होते हुए कहा, ''ठीक है जो चाहते हो करो। हमें इससे बढ़ कर और क्या चाहिए कि तुम्हें अपने कर्तव्य का भान हो गया तथा मनुष्य के प्रथम भगवान अपने माता-पिता का तुम्हें ध्यान आ गया।'' यह कह कर आलोक मुस्कुराने लगा।

''मामाजी अभी बहुत कुछ जानना बाकी है मैं जल्द ही फिर आने का प्रयत्न करूँगा।'' कहते हुए अपने मामा को प्रणाम किया और उन का बहुत आभार माना।

- सतीश भिंद्रा

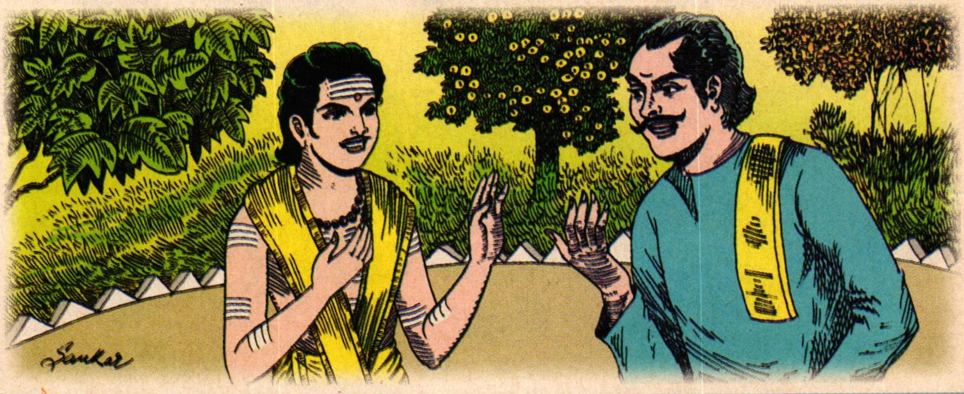

To sing | गाना | ಹಾಡಲು | Kannada | हाडलु

अतिथि-सत्कार

कृष्णकान्त को एक बार अपने पड़ोसी के गाँव जाना पड़ा। उस वक़्त उसके पिता ने समझाया, ''बेटा, उस गाँव में हमारे एक रिश्तेदार हैं, लेकिन बात यह है कि वहाँ जाने पर वे लोग हद से ज़्यादा सत्कार करते हैं, इसलिए तुम किसी धर्मशाला में जाकर ठहर जाना।'' पर कृष्णकान्त यह सोच कर अपने रिश्तेदारों के घर गया कि रिश्तेदारों के यहाँ अतिथि सत्कार पाने में गलत भी क्या है?''

जाड़े के दिन थे। इस कारण पैदल चलने से कृष्णकान्त के तलुओं में बिवाइयाँ हो गई थीं। उसने अपने रिश्तेदारों के घर पहुँच कर किवाड़ों पर दस्तक दी। घर के मालिक ने किवाड़ खोल दिए, कृष्णकान्त से कुशल-प्रश्न पूछे, तब अपनी पत्नी को कृष्णकान्त के आने की खबर दी।

इसके बाद कृष्णकान्त ने घर के अंदर क़दम रखना चाहा। पर मालिक ने उससे रोककर अपनी पत्नी से कहा, ''अरी, सुनो, बच्चे को बुलाओ तो!'' कृष्णकान्त को बाहर खड़े रहने में बुरा लगा। वह अन्दर जाकर बैठना चाहता था। लेकिन मकान मालिक रास्ता रोके खड़ा था और इधर-उधर की बातें किए जा रहा था। कृष्णकान्त ने सोचा कि मकान मालिक उसे जल्दी अंदर जाने न देगा। इस कारण उसने बाहर चबूतरे पर बैठना चाहा। पर मकान मालिक ने उसे मना करते हुए कहा, ''बेटा, थोड़ा रुक जाओ! बच्चा आ जाएगा, तब तक मत बैठो।''

बच्चे के आने में बड़ी देर लगी। लौटने पर वह लोटे में पानी ले आया। इस बीच मकान मालिक ने कृष्णकान्त को समझाया, ''बेटा, अतिथि देवता के समान होता है, इसलिए अतिथि का देवता जैसे सम्मान करना मेरे परिवार की परंपरा है। परिवार के किसी सदस्य के द्वारा अतिथि के पैर धोए जाने चाहिए। मगर तुम मुझसे उम्र में छोटे हो। कन्या दान के समय ही बड़े लोग छोटों

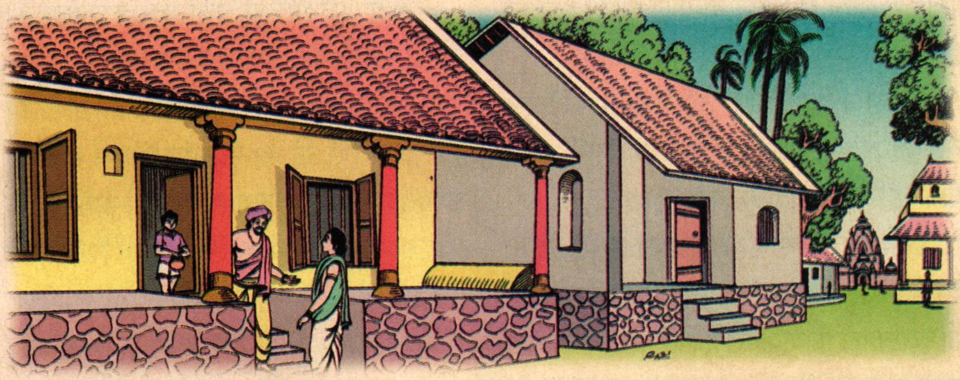

To sing	गाना	ଗାଇବା	Oriya	गाइबा

के पैर धोते हैं। अन्य समयों में ऐसा करने पर बड़ों की आयु क्षीण हो जाती है। जवान लड़कियों को पराए पुरुषों के पैर नहीं धोने चाहिए इसलिए मुझे छोटे के इंतज़ार में रुकना पड़ा। उसे खोजने में देर हो गई। पैर बिना धोए अतिथि को नहीं बिठाया जाता है अतः बुरा न मानना।''

''जी मेरे पैरों में बिवाइयाँ हो गई हैं। ठण्डे पानी के लगने से जलन होगी।'' कृष्णकान्त ने समझाया।

''ऐसा न कहो, बेटा! तुम बहुत दूर से पैदल चल कर आए हो। इसलिए तुम्हें ठण्डे पानी से पैर धोने चाहिए।'' मालिक ने कहा।

इसके बाद बच्चे ने कृष्णकान्त के पैर धोए। तब वह भीतर जाकर बैठ गया। मालिक ने नाई को बुलावाकर कृष्णकान्त के पैरों की तेल मालिश करवाई। तब जाकर कृष्णकान्त की थकावट मिट गई।

रात को भोजन के बाद पुराण कथा वाचक को बुलाया गया। कथा वाचक आधी रात तक पुराण सुना कर चला गया।

मकान मालिक ने कहा, ''बेटा, कहा जाता है कि अतिथि के साथ पुराण सुनने से पुण्य मिलता है। ऐसे समयों को छोड़ बाकी समयों में तुम्हें और मुझे भी पुराण सुनने का मौका कहाँ मिलता है?''

यूँ तो कृष्णकान्त को जल्दी सोने की आदत थी। पुराण वाचन की वजह से देर रात तक जागे रहना पड़ा। सोने में देर होने की वजह से रात में नींद ही नहीं आई।

कृष्णकान्त के सोने के लिए आँगन में बिस्तर का इंतज़ाम किया गया। ज्यों ही वह खाट पर लेटा, त्यों ही छोटे बच्चे ने पिछवाड़े से कुत्ते को लाकर चारपाई से बाँध दिया।

कृष्णकान्त ने पूछा, ''यह क्या? मेरी चारपाई से यह कुत्ता क्यों बाँधा जा रहा है?''

''बेटा, इस गाँव में चोरों का डर ज़्यादा है। चोर दल बाँध कर एक साथ आ जाते हैं, कभी-कभी आदमियों को भी मार डालते हैं। इसीलिए हम कुत्ता पाल रहे हैं। इधर थोड़े दिनों से चोरों का दबदबा कम हो गया है, फिर भी अतिथि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।'' बुज़ुर्ग रिश्तेदार ने समझाया।

कृष्णकान्त कुत्तों के नाम से ही डरता था।

To sing	गाना	ગાવું	Gujarati	गावुं

यह विदेशी नस्ल का कुत्ता शेर जैसा है। वह उस घर के लिए नया आदमी था। इस वजह से कुत्ता बार-बार उसे सूँघ कर टोह ले रहा था। इस डर से उसकी रही सही नींद भी जाती रही।

तड़के उसकी आँख लगी ही थी कि उसके रिश्तेदार ने आकर उसे जगा दिया। उसका कहना था कि अतिथि के जागने पर ही और काम करने चाहिए।

रात भर नींद न मिलने, यात्रा की थकावट और जलवायु के बदलने से कृष्णकान्त को जुकाम हो गया और वह छींकने लगा।

घर के मालिक की सत्तर वर्ष की बूढ़ी माँ कृष्णकान्त के समीप आ पहुँची। ज्यों ही वह छींकता, त्यों ही वह गरम पानी में अपनी अँगुलियाँ डुबो कर उसके सर पर छिड़कते हुए कहती, ''चिरंजीव भव!'' फिर क्या था जल्द ही उसका सर भीग गया।

जब कृष्णकान्त की छींकें बंद हुईं, तब बूढ़ी ने पूछा, ''बेटा, अब तबियत कैसी है?''

''नानीजी, सर पोंछने के लिए तौलिया चाहिए।'' कृष्णकान्त ने विनीत स्वर में कहा।

''ऐसा न कहो, बेटा! सर नहीं पोंछना चाहिए। उसे स्वयं सूखने देना है। घर के लोगों की इस प्रकार जल अभिषेक से सेवा नहीं की जा सकती है। तुम अतिथि हो, इसलिए विशेष सावधानी रखनी होती है।''कह कर बुढ़िया समझाकर चली गई।

कृष्णकान्त ने इस प्रकार चार दिन किसी तरह बिताए। पुराण श्रवण और श्वान दर्शन ने चार दिन तक उसे नींद की एक झपकी तक न लेने दी।

जिस दिन कृष्णकान्त अपने घर जानेवाला था, उसके लिए विशेष रूप से एक शरबत तैयार किया गया। घर के मालिक ने उसे गिलास थमाते हुए कहा, ''बेटा, यह अमृत जैसा पेय हम सिर्फ अतिथियों के लिए ही बनाते हैं। तुम्हें यह सात गिलास मेरे हाथों से लेकर अकेले ही पीना है। यह हम घर के लोग नहीं पी सकते। यह हमारा रिवाज़ है।''

कृष्णकान्त ने विस्मय में आकर कहा, ''अतिथियों के बारे में ऐसी सावधानी बरतने वाले लोग नहीं के बराबर हैं। मेरे कारण आप को कष्ट हुआ और खर्चा भी हो गया है।''

To sing गाना गावटैन Assamese गाबलै

"यह कौन बड़ी बात है, बेटा? लेकिन मुझे आश्चर्य इस बात का होता है कि हमारे घर जो भी एक बार आता है वह फिर नहीं आता।" मालिक ने कहा।

ये शब्द सुन कर वह आश्चर्य से भर गया। 'ये लोग हद से ज़्यादा भले ही सत्कार करें, पर इनके स्नेह और वात्सल्य में कोई कमी नहीं है। फिर अतिथि क्यों डर जाते हैं?' यह सोचते हुए कृष्णकान्त ने शरबत का स्वाद लिया।

इसके बाद वह बोला, "मैं समझ गया कि एक बार आपके घर आने वाला अतिथि दोबारा क्यों नहीं आता? आप लोग अतिथि को देवता के समान सत्कार करते हैं। देवता तो पत्थर होता है, इसलिए वह सब कुछ सहन कर सकता है। मगर मानव के लिए यह संभव नहीं है। यह शरबत पीना मुझे अकेले को पीना अन्याय है। आप के घर के सभी लोगों को मेरे साथ इस शरबत को पीना होगा।"

घर के लोग तैयार न हुए, तब कृष्णकान्त ने ज़ोर दे कर कहा, "अतिथि की अंतिम इच्छा को सब को स्वीकार करना होगा।" इस पर सबने वह शरबत पी लिया।

घर के मालिक ने शरबत का स्वाद लेकर क्रोध-पूर्वक कहा, "इसका स्वाद तो ज़हर सदृश है, इसे कोई मत पीना।" वास्तव में ही शरबत बेहद कड़वा तथा बेस्वाद था।

इस पर कृष्णकान्त ने कहा, "अब आप सब ही बताइए, सात गिलास ऐसा शरबत पीने वाला अतिथि कभी दोबारा यहाँ कैसे आएगा?"

बुजुर्ग रिश्तेदार ने लज्जा से अपना सर झुका लिया। उसने भाँप लिया कि उसकी पत्नी अतिथियों को आने से रोकने के लिए ही ऐसा शरबत तैयार करती है।

कृष्णकान्त ने समझाया, "अतिथि के प्रति विशेष आदर न प्रदर्शित करके अपने ही परिवार का एक व्यक्ति मान लें तो कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं आपके आतिथ्य से बहुत ही कृतज्ञ हूँ।" इन शब्दों के साथ वह परिवार के सभी लोगों को आतिथ्य सार समझा कर, उनसे विदा लेकर अपने गाँव वापस चल पड़ा।

- सुधा राणी

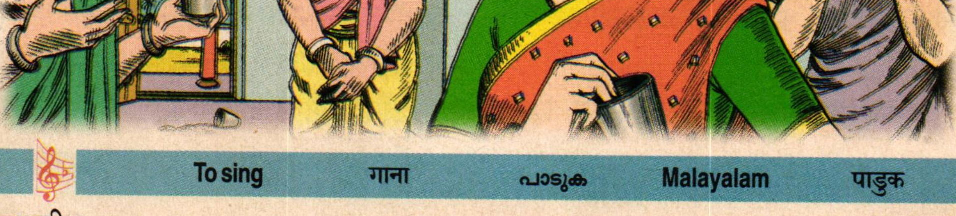

To sing | गाना | പാടുക | Malayalam | पाडुक

जीवन नदी

पत्नी के मर जाने पर विशाल के मन में एक और संदेह ने घर कर लिया कि मर जाने के बाद उस जीव पर क्या गुज़रती है। इस पर उसने खूब सोचा। तत्व ग्रंथों का पठन एवं मनन किया। जो एक ग्रंथ बताता है वह दूसरा ग्रंथ नहीं बताता। वह किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता है।

ठीक उसी समय पर ज्ञानानंद उस शहर में पधारे और राम मंदिर में रहने लगे। हर दिन शाम को वे आध्यात्मिक विषयों पर भाषण देने लगे। जिज्ञासु विशाल बिना चूके उन भाषणों को सुनता रहा। एक दिन शाम को उसने स्वामी जी से एकांत में भेंट की और अपना संदेह व्यक्त किया।

स्वामी ज्ञानानंद ने मुस्कुराते हुए कहा, ''तुम्हारा संदेह तर्क संगत है। प्राकृतिक नदियाँ पर्वतों में जन्म लेती हैं फिर भूमि को सींचती व प्यास बुझाती हुई जाती हैं तथा अंत में समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है। उनकी ही तरह मनुष्य जन्म लेता है वह दूसरों की भलाई करते हुए जीवन बिताता है तब उसका जन्म सार्थक होता है। कालगर्भ में विलीन हो जाने के बाद उसका क्या हुआ, यह कोई मुख्य विषय नहीं है और उसके बारे में जानना हमारे लिए कोई आवश्यक भी नहीं है। जीवित रहते समय हम क्या करें इस पर सोचना तथा भले कार्य करना ही विशेष महत्व रखता है। जिस प्रकार प्राकृतिक नदी अपने कार्य में तत्पर समुद्र में विलीन होने के लिए चलती जाती है, उसी प्रकार जीवन नदी है जो अपने कार्य में तत्पर रह कर अंत में ईश्वर से मिल जाती है । किसी भी प्रकार की नदी का भटकाव उसके पथ को और अधिक लंबा कर देता है बस यह याद रखो तथा उचित कर्म करो।''

विशाल ने श्रद्धापूर्वक स्वामीजी के चरण स्पर्श किए तथा शेष जीवन उनके कथनानुसार परोपकार तथा दुःखी जनों की सहायतार्थ बिताया।

- राजी प्रसाद

To sing	गाना	ᱥᱮᱨᱮᱧ	Santali	सेरेञ

जंगल में मंदिर

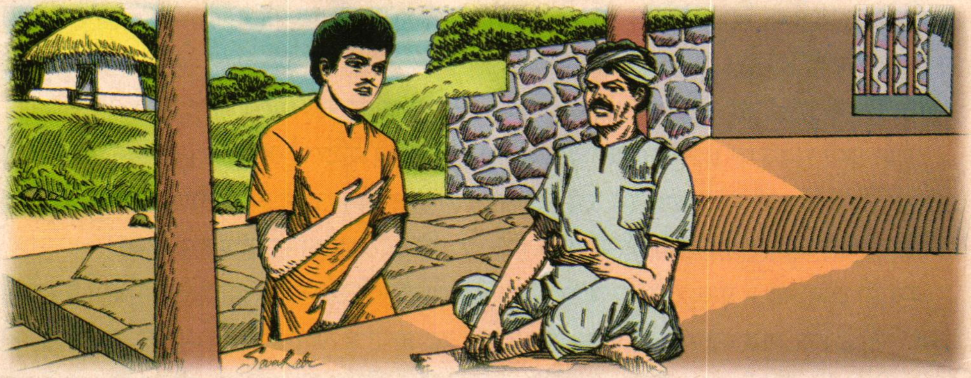

अमर गंगानगर में रहा करता था बालपन में ही उसके माँ-बाप की मृत्यु हो गई, इसलिए शंभु नामक एक गरीब किसान ने उसे पाला-पोसा और बड़ा किया।

शंभु की बेटी मल्लिका बड़ी ही सुंदर थी। अमर उसे बहुत चाहता था। परंतु मल्लिका के ह्रदय में उसके लिए कोई स्थान न था। वह अनाथ अमर की गरीबी को देख कर ही उस पर दया दिखाती थी। जब अमर को यह पता लगा तो वह धन कमाने शहर चला गया।

उसके जाने के बाद जयपुर निवासी शंकर व्यापार हेतु उस गाँव में आया। वहाँ उसने अतीव सुंदरी मल्लिका को देखा तथा उस पर मुग्ध हो गया। वह शंभु से मिला तथा मल्लिका से विवाह की इच्छा प्रकट की। शंभु ने इस सुनहरे अवसर को जाने नहीं दिया तथा चट मंगनी पट ब्याह कर दिया। मल्लिका भी इस विवाह से अत्यंत संतुष्ट हुई। विवाह के पश्चात् शंकर मल्लिका को भी अपने साथ जयपुर ले गया।

इधर शहर आने के बाद अमर की मेहनत तथा किस्मत रंग लाई। एक ही वर्ष में उसने लाखों अशर्फियाँ कमाईं और यह सोचते हुए वह गाँव लौटा कि मल्लिका से विवाह करेगा। परंतु सब बात जान कर उसे बहुत दुःख हुआ। शंभु ने उसे सलाह दी कि वह किसी अन्य लड़की से विवाह कर ले और आराम से जीवन गुज़ारे।

पर अमर मल्लिका को भुला नहीं पाया। उसने जो भी धन कमाया था वह शंभु को दे दिया और संन्यास लेने एक आश्रम में चला गया।

आश्रम के गुरू ने उसकी कहानी सुनी और उससे कहा, ''तुम्हारे वैराग्य का कारण मल्लिका को हासिल न कर पाना है। यह वैराग्य का उचित कारण यानि माया से मुक्ति प्राप्ति नहीं है। तुम जानते हो कि अब मल्लिका शंकर की धर्मपत्नी है तुम्हें वह बिल्कुल ही भूल गयी है। अगर शंकर के साथ कुछ दिन बिताओगे तो सब सत्य सामने आ जाएगा और तुम्हारा मन भी निर्मल हो जाएगा।

To sing | गाना | गातुम् | Sanskrit | गातुम

तब वापस आकर विचार कर बताना कि संन्यास के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं।''

अमर ने गुरू की आज्ञा का पालन किया तथा शंकर के घर गया। तब शंकर घर पर नहीं था। मल्लिका ने जब उसका कुशल-क्षेम पूछा तब उसने मल्लिका से पूछा कि उसने उसे धोखा क्यों दिया तथा किसी अन्य से विवाह क्यों किया। तब मल्लिका हँस पड़ी और बोली, ''मैंने कभी तुमसे विवाह की कामना नहीं की कभी तुमसे यह भी नहीं कहा कि धन कमाओ और फिर मुझसे विवाह की बात सोचना। मेरा पक्का विश्वास था कि मेरी सुंदरता पर रीझकर कोई न कोई धनवान मुझसे विवाह अवश्य करेगा। मेरा विश्वास सच निकला। यह सब मेरा भाग्य है और तुम्हारा दुर्भाग्य। अब बताओ इसमें धोखे की क्या बात है?''

इतने में शंकर वहाँ आ गया। अमर ने उसे संपूर्ण वृतांत बताते हुए उससे वहाँ कुछ समय सेवक के रूप में बिताने की विनती की। तब शंकर ने कहा, ''अनजाने में तुम्हारे साथ मेरी वजह से बड़ा अन्याय हुआ है। सेवक बन कर मेरे घर पर रहने की तुम्हारी इच्छा सही नहीं है। पर तुम्हें मैं एक उपाय सुझाता हूँ। इस शहर के समीप ही घना जंगल है। मैंने सुना है कि वहाँ एक दयावान भगवान हैं जो भले तथा निर्मल हृदय वाले लोगों की इच्छा पूर्ण कर उनका कल्याण करते हैं। तुम वहीं जाओ तुम्हारा भी अवश्य कल्याण होगा।''

परंतु सच कहा जाए तो शंकर ने अपनी पत्नी के प्रेमी को हिंस्त्रक पशुओं भरे जंगल में भेज दिया।

किन्तु सरल अमर ने उसकी बातों पर पूरी तरह विश्वास कर लिया तथा जंगल से आती भयानक आवाज़ों के बावजूद वह आगे बढ़ता गया। वहाँ केवल पशुओं की ही नहीं बल्कि सर्पों के फुफकारने की भी आवाज़ें आ रही थीं। घने जंगल में प्रवेश के साथ ही सर्प ज़मीन पर रेंगते हुए नज़र आये, पर वह बेधड़क आगे बढ़ता गया। घने जंगल में उसने देखा कि एक बरगद के तले चमकता हुआ एक स्फटिक शिव लिंग विराजमान है। ठीक उसी समय उसे एक आवाज़ सुनाई दी, ''मैं अरण्येश्वर हूँ। मुझे तुम्हारी अच्छाई तथा निस्वार्थता बहुत ही अच्छी लगी। तुम अब यहीं पर रहना तथा मेरी सेवा करना। तुम जो भी चाहोगे वह तुम्हें मिलेगा।''

अमर बहुत ही संतुष्ट होकर बोला, ''मेरी अब

To bathe	नहाना	స్నానం చేయడానికి	Telugu	स्नानं चेयडानिकि

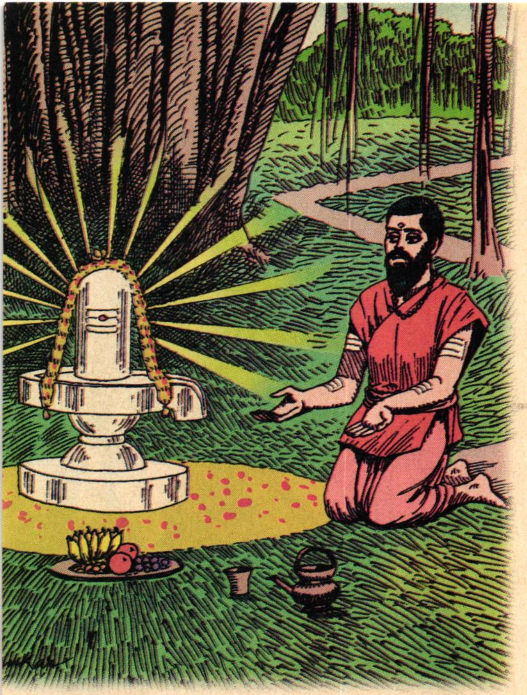

एकमात्र इच्छा है कि मैं मल्लिका को बिल्कुल भूल जाऊँ।'' ऐसा कह कर पूरे मनोयोग से वह अरण्येश्वर स्वामी की सेवा करने लगा।

इस प्रकार शिवलिंग की सेवा पूजा में वह स्वयं को भी भूलने लगा। उसका एक मात्र कार्य बस अपने आराध्य की सेवा अर्चना ही बन गया। भोजन इत्यादि हेतु उसने कभी चिंता न की। अतः उसके आराध्य के कहे अनुसार उस दैनिक आवश्यकताएँ स्वयमेव ही पूरी हो जाती थीं।

इस प्रकार उसका वैराग्य क्रमशः बढ़ता गया। एक दिन उसने शिवलिंग को साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हुए कहा, ''हे भगवान! मुझे इसी जीवन में मोक्ष प्रदान कीजिए।'' तब उसे स्फटिक लिंग से सुनाई दिया, ''मोक्ष की सिद्धि के लिए ईश्वर की सेवा के साथ-साथ मनुष्य सेवा भी आवश्यक है। शंकर ने तुम्हारा अंत करने के लिए यहाँ भेजा। अब उस पाप के फलस्वरूप वह एक ऐसे रोग से पीड़ित है कि जिसकी चिकित्सा किसी भी मनुष्य द्वारा संभव नहीं है। उसके रोग के निदान का उपाय मैं तुम्हें बता दूँगा। तुम्हें यदि यह स्वीकार हो तो तुम उसे सपने में दिखाई पड़ोगे। तुम्हारी वजह से अगर वह रोग ठीक हो जाए तो तुम्हें मोक्ष प्राप्ति होगी।''

चकित होकर अमर ने कहा, ''यह बात आप उसे सपनों में बता सकते हैं यह अत्यंत आश्चर्य है।''

''उसने तुम्हें धोखा देकर तुम्हारे अंत की योजना बनायी। अब तुम्हारे क्षमा दान देने पर ही उसका रोग कम होगा। जब उसके अपकारों को भी तुम क्षमा कर दोगे तब तुम्हें मोक्ष मिलेगा।'' शिवलिंग में से आती आवाज़ ने उसको बताया।

इस वार्ता के पश्चात् अमर, शंकर के सपने में उसे दिखाई पड़ा और उसने कहा, ''इस शहर के समीप के जंगल में बरगद वृक्ष के नीचे जो अरण्येश्वर हैं, उनके दर्शन कर के सोलह प्रदक्षिणा करने से तुम्हारी सब बीमारी ठीक हो जाएगी।''

सपने में अमर को देख कर एक दिन शंकर आधी रात को ही जंगल जाने के लिए निकल पड़ा। अरण्येश्वर का ध्यान करत हुए वह तेज़ी से चलते हुए बरगद के वृक्ष के पास पहुँचा। उसके नीचे ज्यों ही स्फटिक लिंग देखा त्यों ही वह भक्ति भाव में डूब गया तथा आँखें मूँद लीं तथा शिव का ध्यान

To bathe नहाना குளிக்க Tamil कुलिक्क

करते हुए पूर्ण भक्ति भाव से उसने सोलह प्रदक्षिणाएँ कीं। जैसे ही उसने आँखें खोलीं सामने अमर खड़ा हुआ दिखाई दिया। उसने पूछा, ''क्या तुमने मुझे पहचाना?'' फिर उसने अपनी कहानी सुनाई और कहा, ''ईश्वर की कृपा से अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो। संतुष्ट होकर घर लौटो तथा स्वामी का प्रचार करना जिससे अनंत लोगों को लाभ पहुँचेगा तथा उनमें भक्ति भावना बढ़ेगी। इस प्रकार यह परोपकार साबित होगा। इसके अतिरिक्त यदि तुम स्वामी की नित्य पूजा-अर्चना का प्रबंध कर सकोगे तो मुझे मोक्ष प्राप्त होगा। समझ लो यह तुम्हारा प्रत्युपकार है।''

शंकर ने हाथ जोड़ते हुए अमर से कहा, ''मैं यहाँ मंदिर निर्माण करवाऊँगा तथा नित्य पूजा हेतु किसी पुण्यात्मा पुजारी को नियुक्त करूँगा।''

अमर ने ''न'' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा, ''यहाँ मंदिर का निर्माण आवश्यक नहीं है। बस इतना करो कि प्रतिदिन यहाँ कोई आकर पूजा करे।''

शंकर ने समझा कि वह अब भी उससे नाराज़ है। अतः उसने कहा, ''तुम अब भी मुझसे नाराज़ हो लेकिन मात्र इसी कारण से कितने ही अभागों को आसानी से दर्शन करने का भाग्य उनसे छीन रहे हो।''

अमर ने हँसते हुए कहा, ''मनुष्य के लिए नगर जितने आवश्यक हैं उतने ही अरण्य भी हैं। यह जंगल शहर के बगल में है इस कारण से वर्ष में तीन बार वर्षा होती है, जिससे चारों ओर सुभिक्ष व्याप्त है। यहाँ वनस्पति की प्रचुर मात्रा की वजह से लोग शुद्ध व ताज़ा हवा का लाभ प्राप्त करते हैं। मंदिर निर्माण से जंगल का नाश होगा। जंगल के नाश से उत्पन्न बीमारियाँ फिर भगवान भी ठीक नहीं कर पाएँगे।''

शंकर ने उसकी सारी बातें मान लीं। अब हर दिन भगवान की पूजा होती है। अमर को मोक्ष प्राप्त हुआ। शंकर रोज़ ही पूजा हेतु जंगल आता तथा लोगों से जंगल के परोपकार की चर्चा करता जिससे सब खुशहाल रहें। राजा ने इस कहानी का प्रचार देश विदेशों में करवाया। दुनिया भर में वन संरक्षण हेतु इस कहानी से अपूर्व योगदान दिया।

To bathe	नहाना	স্নান	Bengali	स्नान

चूँ चूँ का डिब्बा

नीचे दी गई सूची देखिए और अपनी भाषा में उन्हें पढ़िए। तत्पश्चात् नीचे सूची देखिए और सीखिए उन्हें अन्य भाषाओं में कैसे कहते हैं और कैसे लिखते हैं।

English	To walk	To eat	To sing	To bathe	To dance
Hindi	चलना	खाना	गाना	नहाना	नाचना
Telugu	నడవడానికి नडवडानिकि	తినడానికి तिनडानिकि	పాడడానికి पाडडानिकि	స్నానం చేయడానికి स्नानं चेयडानिकि	నాట్యం చేయడానికి नाट्यं चेयडानिकि
Tamil	நடக்க नडक्क	சாப்பிட साप्पिड	பாட पाड	குளிக்க कुलिक्क	நாட்டியமாட नाट्टियमाड
Bengali	হাঁটা हाँटा	খাওয়া खावोवा	গান गान	স্নান स्नान	নাচ नाच
Marathi	चालणे चालणे	खाणे खाणे	गाणे गाणे	नाहाणे नाहाणे	नाचणे नाचणे
Kannada	ನಡೆಯಲು नडेयलु	ತಿನ್ನಲು तिन्नलु	ಹಾಡಲು हाडलु	ಸ್ನಾನಮಾಡಲು स्नानमाडलु	ನರ್ತಿಸಲು नर्तिसलु
Oriya	ଚାଲିବା चालिबा	ଖାଇବା खाइबा	ଗାଇବା गाइबा	ଗାଧୋଇବା गाधोइबा	ନାଚିବା नाचिबा
Gujarati	ચાલવું चालवुं	ખાવું खावुं	ગાવું गावुं	ન્હાવું न्हावुं	નાચવું नाचवुं
Assamese	খোজ কাঢ়ো खोज काढ़ो	খাবলৈ खाबलै	গাবলৈ गाबलै	গাধুবলৈ गाधुबलै	নাচিবলৈ नाचिबलै
Malayalam	നടക്കുക नडक्कुक	തിന്നുക तिन्नुक	പാടുക पाड्डुक	കുളിക്കുക कुलिक्कुक	നൃത്തം ചെയ്യുക नृत्तं चेय्युक
Santali	ᱛᱟᱞᱟᱢ तालाम	ᱡᱚᱢ जोम	ᱥᱮᱨᱮᱧ सेरेञ	ᱛᱩᱯᱩᱱ तुपून	ᱮᱱᱮᱡ एनेज
Sanskrit	चलितुम् चलितुम	खादितुम् खादितुम	गातुम् गातुम	स्नातुम् स्नातुम	नर्तितुम् नर्तितुम

तिरछे लिखे शब्दों तथा कोष्ठक में इंगित भाषा को देखिए। ऊपर दी गई तालिका में शब्द ढूँढ़िए तथा वाक्यों के बराबर में लिखिए :

१. मुझे स्कूल जाने के लिए रोज़ पैदल ***चलना*** पड़ता है। (तेलुगु) :

२. मैं मिठाइयाँ ***खाना*** पसंद करता हूँ। (असमिया) :

To bathe | **नहाना** | **नाहाणे** | **Marathi** | **नाहाणे**

English	To talk	To write	To read	To swim	To smile
Hindi	बात करना	लिखना	पढ़ना	तैरना	हँसना
Telugu	మాట్లాడడానికి माट्लाडडानिकि	రాయడానికి रायडानिकि	చదవడానికి चदवडानिकि	ఈదడానికి ईदडानिकि	నవ్వడానికి नव्वडानिकि
Tamil	பேச पेस	எழுத एलुद	படிக்க पडिक्क	நீந்த नीन्द	புன்னகைக்க पुण्णगैक्क
Bengali	বলা बला	লেখা लेखा	পড়া पड़ा	সাঁতার साँतार	হাসি हासि
Marathi	बोलणे बोलणे	लिहिणे लिहिणे	वाचणे वाचणे	पोहणे पोहणे	हंसणे हंसणे
Kannada	ಮಾತಾಡಲು माताडलु	ಬರೆಯಲು बरेयलु	ಓದಲು ओदलु	ಈಜಲು ईजलु	ನಗಲು नगलु
Oriya	କଥା ହେବା कथा हेबा	ଲେଖିବା लेखृबा	ପଢ଼ିବା पढ़िबा	ପହଁରିବା पहँरिबा	ହସିବା हसिबा
Gujarati	બોલવું बोलवुं	લખવું लखवुं	વાંચવું वांचवुं	તરવું तरवुं	હસવું हसवुं
Assamese	কথা পাতিবলৈ कथा पातिबलै	লিখিবলৈ लिखिबलै	পঢ়িবলৈ पढ़िबलै	সাঁতুৰিবলৈ साँतुरिबलै	হাঁহিবলৈ हाँहिबलै
Malayalam	സംസാരിക്കുക संसारिक्कुक	എഴുതുക एलुतुक	വായിക്കുക वायिक्कुक	നീന്തുക नीन्तुक	പുഞ്ചിരിക്കുക पुन्चिरिक्कुक
Santali	ᱨᱚᱯᱚᱲ रोपोड	ᱚᱞᱚᱜ ओलोअ्	ᱯᱟᱲᱦᱟᱣ पाडहाव	ᱯᱟᱭᱨᱟᱜ पायराअ्	ᱞᱟᱸᱫᱟ लांदा
Sanskrit	वक्तुम् वक्तुम	लेखितुम् लेखितुम	पठितुम् पठितुम	तरीतुम् तरीतुम	हसितुम् हसितुम

३. मेरी बहन ***गाना*** सीख रही है। (बंगाली) :

४. मेरा कुत्ता को ***नहाना*** बिलकुल पसन्द नहीं है। (तमिल):

५. मेरी माँ को ***नाचना*** जानती है। (कन्नड़) :

६. हमें पूजा के समय ***बात करना*** मना है। (गुजराती):

७. मेरे पिताजी ३ भाषाओं में ***लिखना*** जानते हैं। (संथाली) :

८. मैंने पाँच वर्ष की उम्र में ***पढ़ना*** सीख लिया था। (मलयालम) :

९. हमने अपने दादाजी के तालाब में ***तैरना*** सीखा। (संस्कृत) :

१०. तस्वीर खींचवाते समय बच्ची को ***हँसना*** पसन्द है। (उड़िया) :

To bathe | नहाना | ಸ್ನಾನಮಾಡಲು | **Kannada** | स्नानमाडलु

सुरा पान करनेवाले देवता

भक्तगण फल, नारियल और मिठाइयाँ अपने प्रेम तथा लगाव के रूप में देवी-देवताओं को चढ़ाते हैं। लेकिन क्या आपने लोगों द्वारा सर्वशक्तिमान को सुरा चढ़ाते सुना है?

मध्यप्रदेश में उज्जैन के श्री काल भैरव मंदिर में देश के हर कोने से श्रद्धालु भक्तगण आते हैं तथा भगवान के चरणों में सुरा चढ़ाते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब पुजारी मधु से भरी तश्तरी मूर्ति के समक्ष प्रस्तुत करते हैं, तो प्रस्तर प्रतिमा धीरे-धीरे इसे पीना प्रारंभ कर देती है! यह कोई वर्ष में एकाध बार होने वाला चमत्कार नहीं है, किंवदंती के अनुसार यह प्रतिदिन होता है! उत्सव के दिन भगवान सैकड़ों बोतल सुरापान करते हैं। कोई नहीं जानता कि यह मदिरा जाती कहाँ है परंतु यह युगों से हो रहा है क्योंकि यह मंदिर सैकड़ों वर्ष पुराना है।

मृत्युपर्यंत सेवा में तैनात सैनिक

बाबा हरभजन सिंह नामक भारतीय थल सेना नायक १९६२ में भारत-चीन युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुआ। ऐसा विश्वास है कि वह आज भी पूर्वी सिक्किम में नाथूला दर्रे पर अपने कर्तव्य पथ पर तैनात है। हरभजन सिंह, कथानुसार, १९६२ भारत-चीन युद्ध के दौरान एक हिमस्खलन में दब गए। उनके सहयोगियों ने तकरीबन १३,१२३ फीट ऊँचाई पर उनकी समाधि को एक समाधि-मंदिर बना दिया। सेना की लोककथानुसार हर भजन सिंह अनुशासन हेतु एक निर्णायक व्यक्ति था। यह कहा जाता है कि भारत-चीन युद्ध से पूर्व बाबा ने तीन दिन पहले ही भारतीय सैनिकों को बता दिया था। दोनों देशों के बीच ध्वजा-गोष्ठियों के दौरान चीनियों ने अलग से एक कुर्सी महात्मा के लिए बिछाई।

To bathe	नहाना	ଗାଧୋଇବା	Oriya	गाधोइबा

निष्प्राण शहर

२८०० ईसा पूर्व काल, निष्प्राण शहर, सिंधु नदी के किनारे

एक आदमी एक छोटी सी पहाड़ी पर खड़े हुए नदी तथा दूर तक फैले शहर को देख रहा था।

साफ दूर तक फैले हुए ईंटों के ढाँचे जबकि चौड़ी इमारतों को बीच में से काटती हुई थीं। आवाज़ों से खनखनाती हुई दूर एक महान नदी लेटी थी। बच्चे गलियों में दौड़ रहे थे दूसरी ओर सामान लादे हुए जानवर जाँच चौकी से गुज़र रहे थे।

''मेरे भगवान'', आदमी ने साँस ली।

''अरे!'' उसके दाँयी ओर से आवाज़ आई।

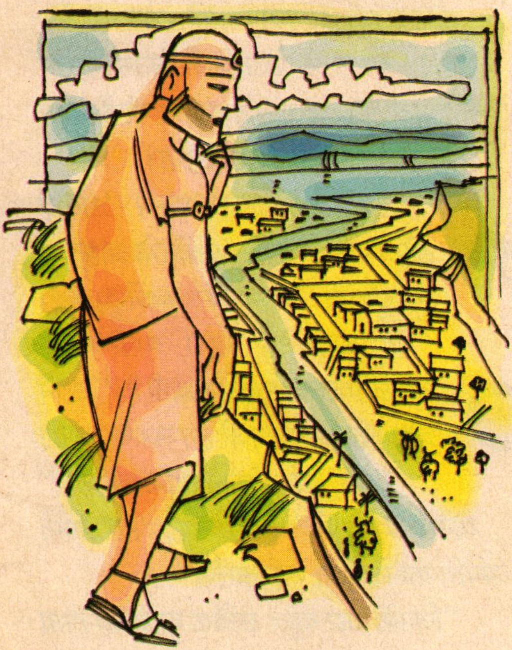

''क्या यह शुरुप्पक का व्यापारी तो नहीं!''

* * *

२८२५ ईसा पूर्व काल, दारो, उत्तरी पश्चिमी सिंध के मैदानों पर एक उपनिवेश

पतले लंबे पेड़ों के एक झुंड के नीचे पंद्रह वर्षीय नौजवानों की एक तिकड़ी बैठी हुई थी। दो कंचे खेल रहे थे; तीसरा एक टहनी से अपने दाँत कुरेद रहा था।

''अजीब बात है आबा शादी कर रहा है,'' निरिम ने टहनी आगे करते हुए बात ज़ाहिर की। ''मेरा मतलब है- वह हमसे थोड़ी ही बड़ी है।''

''बकरियों का एक रेवड़ तथा घर के सामान के लिए गाड़ी रखने लायक बड़ी तो है।'' आबा का भाई, बार्तब बुदबुदाया। ''मैं उसके पिता द्वारा उस पर न्योछावर की गई संपत्ति की कल्पना भी नहीं कर सकता!''

''वहाँ शुरुप्पक का एक व्यापारी भी है जिसके पास ताँब के आभूषणों की एक गठरी है,'' मेनिस ने बताया।

''अगर वह सबको धूल न चटा दे तो!'' निरिम ने टिप्पणी की। ''वैसे यह शुरुप्पक है कहाँ?'' उसने पूछा।

''बहुत दूर कि तुम उसे देख भी नहीं सकते,'' बार्तब ने खीसें निपोरीं। ''यह एक सुमेरियन शहर है-यहाँ से यात्रा के लिए बहुत से महीने लगते हैं।''

To bathe	नहाना	ન્હાવું	Gujarati	न्हावुं

''देखो- क्या वह वही है?'' निरिम ने अपनी अँगुली से इंगित किया।

झोपड़ी के बाहर बहुत से बुजुर्ग तेज़ी से तिरपाल तान रहे थे। मेनिस, निरिम तथा बार्तब धीमे से भीड़ की ओर खिस आए।

''निन्लिल ने मुझे महान रोगनिवारक शक्तियों का आशीर्वाद दिया है,'' शुरुप्पक से आये आदमी ने पहले से प्रदर्शित किए चूर्ण की पुड़ियाएँ, लेप तथा काढ़े को दिखाते हुए कहा। ''मेरे आयातित सामान के साथ मैं बहुत दूर-दराज़ से यात्रा करके आया हूँ- मेरे काढ़े कभी विफल नहीं हुए। आह, महोदया, यह बालों को चमकीला व स्वस्थ बनानेवाला सर्वोत्तम लेप है-आप, श्रीमान! अगर आप यह लेप खरीदेंगे, आप साथ के लोगों में राजकुमार लगेंगे- केवल पाँच मिट्टी की टिकियाँ बस!''

जल्द ही बातों का रुख शांति, ज़मीनों तथा देशों के मामलों की ओर मुड़ गया। ''इयुफ्रेट्स हमेशा से कृपालु रहे हैं और सभी देवता भी, इसलिए'', व्यापारी आगे कहता गया, ''हमने तीन नए अन्नागर बनाए हैं,'' उसने झोपड़ियों की ओर देखते हुए कहा, ''हरेक के आकार का आधा तुम्हारी बस्ती है!'' उसने बड़े लोगों को आँख मारी। ''और हमारे जवाहरात मिस्र, एलम तथा बेबिलोन में नायाब हैं!''

लड़के मुँह खोल कर देखने लगे। बुजुर्ग इन सब शेखियों से बिल्कुल खुश नहीं थे लेकिन इसे जताने में बहुत ही शालीन थे। ''तुम्हें अपनी धनाढ्यता से बेहद खुशी मिलती है।'' दारो के मुखिया- मेनिस के पिता ने विनम्रता से कहा।

''देवी सूड की कृपा से'', व्यापारी ने स्वीकार किया। उसकी आँखें दुर्भावना से चमक उठीं। शायद वह तुम्हारे पर भी कृपा करेंगी। आखिरकार तुम्हारे पाशुपति बहुत दयालु नहीं दिखाई देते।''

हरेक स्तब्ध रह गया। लड़के स्वयं को रोक न सके। ''हम उतने ही अमीर हैं जितने कि तुम यह देखो छः लरों वाला ताँबे का हार मेरे पिता मेरे लिए ले कर आये!'' मेनिस चिल्लाया।

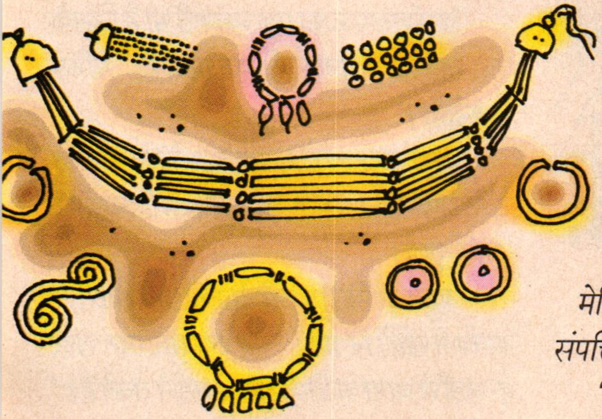

व्यापारी ने ठहाका मारा। ''अमीरी छोटे-मोटे मोतियों तथा ताँबे के आभूषणों में नहीं होती,'' उसने गर्व से फूलते हुए कहा। ''यह तुम्हारे घरों, शहरों, व्यवस्थाओं, संस्कृतियों तथा बुजुर्गों में होती है।'' उसने घृणापूर्वक अपनी नज़रें उन सब पर डालीं।

''तुम हमें कमतर आँक रहे हो,'' मेनिस के पिता ने शांति से कहा। ''हम अपनी संपत्ति का दिखावा नहीं करते।''

''जिनके पास बहुत अधिक कुछ नहीं होता

To bathe	नहाना	गाधुबनै	Assamese	गाधुबलै

यह उनका एक सामान्य सा बहाना है।''

''तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई'' क्रोधित मेनिस ने बोलना शुरू किया तब तक उसके पिता ने रोक दिया। ''हम अभी खराब संबंध नहीं चाहते,'' उन्होंने कहा।

मेनिस वापस जाते हुए विजयोन्माद में चूर व्यापारी को घूरता रहा।

''जाओ और अपने ऊंचों से खेलो छोटे बच्चे!'' उसके शब्द उसके पीछे तैर रहे थे।

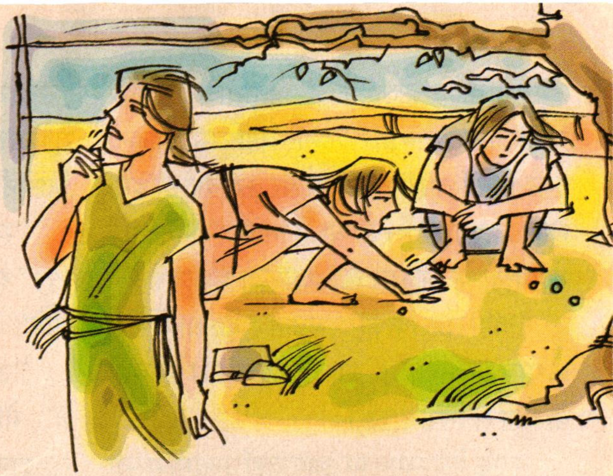

* * *

२८०५ ईसा पूर्व काल, अपूर्ण शहर, सिन्धु नदी के किनारे

तीन आदमी तकरीबन ३५ फीट चौड़ी पहली सड़क के सामने उत्तराभिमुख खड़े थे। यह इससे भी चौड़ी पूर्वी सड़क को ईंटों की इमारतों को बराबरी में तथा आयताकार खंडों को बीचोबीच से काटती थी। सार्वजनिक कूपों वाली हरेक संकरी गली इन आयताकार खंडों से समान कोण में गुज़रती थी। कामगार मधुमक्खियों की तरह उन घरों में जुटे थे जिन सब में निजी कूप तथा स्नानागार थे।

''मुझे नींव तथा फर्श तैयार करने के लिए केवल सूर्य किरणों में सूखी ईंटें चाहिए।'' मेनिस कह रहा था।

''हम बीच की दरारों को कछारी मिट्टी एवं टूटी हुई ईंटों से भर सकते हैं।''

''मैंने कामगारों को निर्देश दिया है कूपों के लिए वक्राकार ईंटों तथा स्नानगार के आसमान किनारों को एकसार करने के लिए टेढ़ी ईंटों का प्रयोग करने के लिए कहा है,'' निरिम जोड़ा। हमारे ईंटों के भट्टे समय से अधिक कार्य कर रहे हैं।''

''तुम सब बहुत ही महत्वाकांक्षी हो,'' बार्तब मुस्कुराया। ''मेरे अपनी ज़िंदगी से कंचों के साथ मटरगश्ती करने के कोई इरादे नहीं हैं,'' मेनिस ने कहा।

''तुम अभी भी उस व्यापारी के ताने भूले नहीं हो।''

''कभी नहीं। मैंने तभी प्रतिज्ञा ली थी कि मैं संसार का सबसे बड़ा शहर बनाऊँगा...''

* * *

२८०० ईसा पूर्व काल, निष्प्राण शहर, सिंध नदी के किनारे

व्यापारी की आँखें आश्चर्य से फैल गयीं। ''यहाँ हमारी सभी सड़कों के नीचे ईंटों तथा पत्थरों से ढकी हुई नालियाँ हैं जो कि नियमित दूरियों पर जाँच हेतु ढक्कनों एवं गड्ढों के साथ एक से दो फीट नीचे बहती हैं,'' जवान आदमी ने अपने से

To bathe	नहाना	കുളിക്കുക	Malayalam	कुलिक्कुक

उम्र में बड़े को अच्छी तरह से नियोजित सड़कों पर ले जाते हुए कहा। ''हमारे यहाँ सभी सोख्ता गड्ढे नियमित समयान्तराल पर कर्मचारियों द्वारा साफ किए जाते हैं। हर घर में निजी स्नानगृह एवं गंदे पानी के निकास की व्यवस्था मौजूद है।''

''यहाँ तक कि हमारे महान सुमेर शहरों तक के पास यह नहीं है।'' शब्द अनिच्छा से व्यापारी के मुख से निकल पड़े।

वे एक ऐसे स्थान पर आए जहाँ आदमी मस्ती में घूम रहे थे। ''महान स्नानागार,'' जवान व्यक्ति ने गर्व से कहा। ''१८० गुणा १८० फीट। स्नान हेतु तालाबों की माप ३८ फीट गुणा २३ फीट, ८ फीट की गहराई के साथ। इसमें विशेषतौर पर पानी के रिसाव को रोकने के लिए जिप्सम मसाला मिश्रण के साथ पतली ईंटों, साथ ही नमी से बचाव हेतु एक इंच तारकोल का प्रयोग किया गया है।''

''तुम्हारे पास एक वाष्प स्नान हेतु एक हमाम भी है,'' व्यापारी ने कहा। ''हर कदम पर रोशनी की व्यवस्था और मैंने केवल कुछ ही शहरों में आरामदायक रिहायशी स्थान देखे हैं। यह महान कवियों तथा नेताओं के योग्य जगह है।''

''तब मेरा काम पूरा हुआ।''

''व्यापारी ने उसकी ओर ग़ौर से देखा। ''मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं तुम्हें जानता हूँ...'' उसकी नज़रें एक अजीब गढे हुए छः लरों वाले ताँबे के हार पर पड़ीं। उसका मुँह खुला रह गया। ''दारो का लड़का...''

''मैं वही हूँ।'' मेनिस झुका। ''यह शहर वर्षों की योजनाओं का नतीजा है। एक शहर जो हमारी बुद्धिमत्ता, ताकत, बुजुर्गों तथा संस्कृति की निशानी है।''

''स्पष्ट रूप से, तब तो तुम कंचों से नहीं खेले हो।'' व्यापारी मुस्कुराया। ''लेकिन तुमने इसका नाम'' 'निष्प्राण शहर' ''क्यों रखा?''

''जीवित समय के साथ धुँधला पड़ जाता है'', मेनिस ने धीरे से कहा। ''मैं चाहता था कि यह शहर अब से लेकर हज़ारो वर्षों तक याद रखा जाए। बिल्कुल महान सुमेर, बेबिलोन तथा मिस्र की ही तरह। हमारे लोग ग़ायब हो जाएँगे- लेकिन संसार को मालूम होना चाहिए कि हमारी सभ्यता कितनी महान थी।'' वह मुस्कुराया। ''और इसलिए मैंने इसे नाम दिया - मोहनजो-दारो।''

- पवित्रा श्रीनिवासन

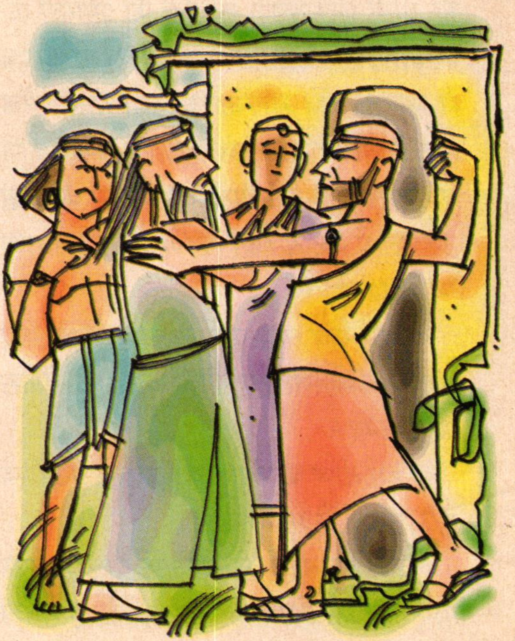

To bathe	नहाना	ᱚᱞᱚᱞ	Santali	तुपून

पाताल दुर्ग-१८

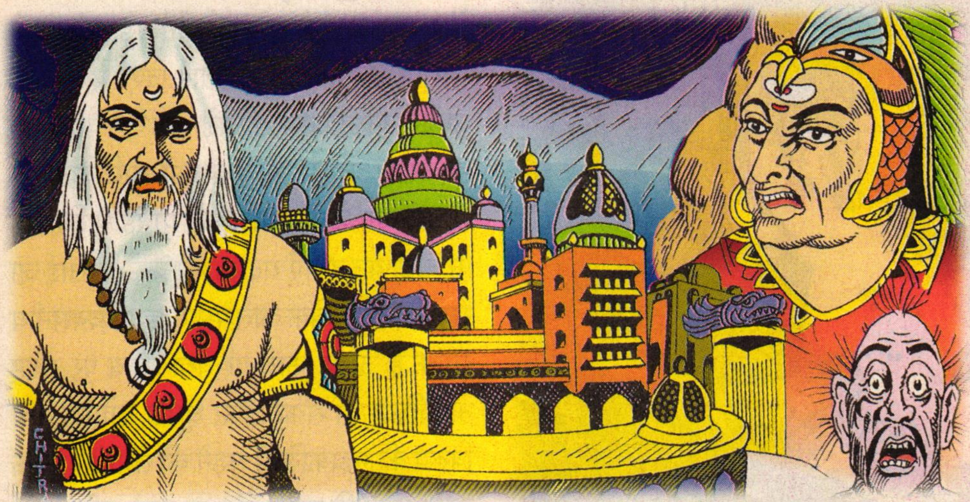

(कालशम्बर मान्त्रिक रात के समय सरोवर में गया, जलस्तम्भन करके वह सुनहरे रंग के मगर के बच्चे को लेकर पानी से बाहर निकला। उसी समय पाताल दुर्ग से राक्षसों के छोड़े हुए पटाके आकाश में उठने लगे। मान्त्रिक, अपने साथियों के साथ गुप्त निवास की ओर चल पड़ा। उसके बाद-)

महाकलि राक्षस के पाताल दुर्ग का क्षेत्रफल कोई एक मील होगा। दुर्ग के चारों ओर पहाड़ थे इसलिए वहाँ रहनेवाले यह न जान पाते थे कि वहाँ कोई किला भी था।

किले में से जंगल में जाने के लिए पहाड़ में राक्षसों ने एक तंग रास्ता बना लिया था। उस पर से राक्षस और उनके गुलाम आया जाया करते थे। जब कभी महाकलि किला छोड़ कर जाना चाहता तो उसी रास्ते हाथियों के रथ पर वह जंगल में टहलने के लिए जाया करता। केवल दोपहर के समय ही पाताल दुर्ग पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ा करती थीं। प्रातःकाल और संध्याकाल जब वन में सूर्य की किरणें चमका करतीं तो पाताल दुर्ग में अँधेरा रहता। उस समय राक्षस बड़े-बड़े लक्कड़ जला अर उनकी रोशनी में अपना कार्य किया करते थे।

राक्षसों के संहार के लिए मान्त्रिक कालशम्बर बहुत दिनों से तैयारियाँ कर रहा था। वह यह देख कर बहुत खुश था कि उसी तैयारियों के सफल होने का समय अब आ गया था। अब पाताल दुर्ग के राक्षसों में, कुम्भीर के साथी उसकी ओर आ गये थे। महाकलि के कारावास में पड़े

To bathe	नहाना	स्नातुम्	Sanskrit	स्नातुम

मन्त्री के लड़के शशिकान्त तथा राजकुमारी कान्तिसेना को, जिसके साथ महाकलि जबर्दस्ती विवाह करने की सोच रहा था, समय आने पर कुम्भीर ने पर्वत के अन्दर के गुप्त निवास में पहुँचाने का वचन दिया। कालशम्बर, महाकलि तथा उसके बन्धुओं को समाप्त करने के बाद, पाताल दुर्ग कुम्भीर को देने के लिए मान गया।

मान्त्रिक ने, जब वह स्वर्ण का मगर ला रहा था, धूमक और सोमक से बहुत सी बातें कहीं, पर वह कैसे महाकलि का खात्मा करने जा रहा था, यह उसने अभी कुछ नहीं बताया था। उनके बार-बार इस विषय में जानने की इच्छा जताने पर उसने कहा, ''अभी कुछ और देर तक उस सब को गोपनीय ही रखना होगा।''

पर यह गोपनीय बात क्या थी, धूमक, सोमक और विरूप कुछ- कुछ जान गए। वे जब मान्त्रिक के साथ आ रहे थे, तो कई लोग बड़े-बड़े टोकरे सिर पर रखे आते हुए दिखाई दिए। एक जगह उन्होंने उन टोकरियों को बड़े-बड़े पेड़ों पर चढ़ाते हुए देखा। इतने पर भी वे दवाओं आदि के प्रभाव से अनजान थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि पेडों पर चढ़ा कर दवाएँ राक्षसों को कैसे खिलाई जा सकेंगी। पर मांत्रिक कालशम्बर, एक विश्वसनीय व्यक्ति है उसके कार्य पर तथा लक्ष्य पर संदेह नहीं किया जा सकता फिर धूमक, सोमक तथा विरूप की महाकलि से लड़ने की तैयारी मांत्रिक कालशम्बर की तुलना में न के बराबर थी। वे तो बस अपने पौरुष के बल पर ही राजकुमारी छुड़ाने चले आए। उन्होंने अपनी ताकत व बुद्धि को ही सर्वश्रेष्ठ मान लिया था पर यह न देखा कि वे सर्वोत्तम मात्र अपने इलाके में थे यहाँ पौरुष और बुद्धिमत्ता ही नहीं बलि छल-बल भी उतना ही महत्व रखता है। उस पर माया जाल की कारीगरी ने राक्षसों को अद्भुत बल प्रदान कर दिया था। वह तो कुम्भीर मांत्रिक की ओर था अन्यथा वे तो गुप्त सुरंग के द्वार पर ही काल के ग्रास बन चुके होते।

वे जब गुफा की सीढ़ियों के पास पहुँचे तो उनको भद्र दिखाई दिया। उसने कालशम्बर मान्त्रिक से कहा, ''करीब-करीब सभी तैयारियाँ पूरी हो गई हैं।''

औषधियों और भस्मों को पेड़ों पर चढ़ा दिया

To dance	नाचना	నాట్యం చేయడానికి	Telugu	नाट्यं चेयडानिकि

गया है। सूर्योदय होते ही, हवा अनुकूल होने पर उनका थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पाताल दुर्ग के राक्षसों पर उपयोग किया जाएगा।

"अच्छा है! राक्षस यूँ ही शराबी होते हैं फिर कल तो उत्सव का दिन है। उस मस्ती में अगर हमारी औषधियाँ जा मिलीं तब तो वे दीन-दुनियाँ ही भूल जाएँगे। उसके बाद पानी, पत्थर, बाण और जंगली जानवर उन्हें यम के पास चलता करेंगे। महाकलि के पास कैद हमारे साथियों को लेकर, सूर्योदय के समय निकल कर सरोवर के पास पहुँचना होगा। यदि वह यह बात भूल गया तो वह भी और राक्षसों के साथ और हमारे मित्र भी मेरी मन्त्र शक्ति के शिकार हो जाएँगे।" कालशम्बर ने कहा।

भद्र ने सिर नीचा करके कुछ देर तक सोचा। "महामान्त्रिक... मैं इस बारे में थोड़ी सी सावधानी बरतना चाहता हूँ। कुम्भीर के पास ख़बर भिजवाता हूँ कि वह अभी ही शशिकान्त और कान्तिसेना को सरोवर के पास ले आये।" भद्र ने कहा।

यह सुनकर मान्त्रिक ने आँखें बड़ी करके कहा, "तुम अपने मित्रों की रक्षा करते हुए मेरी चाल बिगाड़ देना चाहते हो। शायद तुम इस बात के अनजान हो कि महाकलि सूँघ कर पता लगा लेगा कि कौन उसके गढ़ में घुसा है। मैं वातावरोधन क्रिया के बल पर उसे दुर्ग में प्रवेश करता हूँ जिससे उसे गंध का अहसास न हो। इन राक्षसों को प्राण शक्ति अद्भुत होती है। ये इनसानों की तुलना में कहीं अधिक दूरी से किसी की भी गंध का अनुमान लगा पाने में राक्षस है। यही कारण है कि मैंने इन पर पहला हमला इनकी अद्भुत घ्राण शक्ति पर अपनी भस्मों द्वारा किया है। जिस आदमी को तुम उस राक्षस के पास भेज रहे हो, अगर उसे महाकलि के नौकरों ने देख लिया, तो कितनी बड़ी आफ़त आ जाएगी। क्या यह तुम जानते हो? अगर उन्होंने उसको कसकर पकड़ लिया, तो देखते-देखते हमारे सारे भेद खुल जाएँगे। इसलिए कुछ मुख्य बातों को अभी तक मैं सबसे छिपाए हुए हूँ। तुम कुम्भीर के पास किसी को न भेजो।"

भद्र ने स्वीकृति में सिर हिलाया और चला गया। मान्त्रिक ने विरूप की ओर मुड़ कर पूछा, "तुम्हारा गरुड़ मनुष्यों से खूब हिल गया है न?

To dance	नाचना	நாட்டியமாட	Tamil	नाट्टियमाड

सोने के मगर से उसका मेल बिठाना होगा। राक्षसों के अन्धविश्वासों का जहाँ तक संभव हो हमें लाभ उठाना होगा और उनका सर्वनाश करना होगा।''

विरूप ने गरुड़ को मान्त्रिक के हाथ में देते हुए कहा, ''यह कोई देवता पक्षी है। इसे मनुष्यों से अधिक ज्ञान है। उजड़े मन्दिर के पास, इसने वन मानस को एक चोट से ही नीचे गिरा दिया था। विश्वास करो।''

मान्त्रिक ने गरुड़ पक्षी को लेकर नीचे रखा और उसके पास सोने के मगर के बच्चे को धकेला। गरुड़ ने पहले तो उसे अपनी चोंच से मारना चाहा, परन्तु विरूप के रोकने पर सिर घुमा कर कीं-कीं करने लगा।

''शाबाश...'' कालशम्बर ने गरुड़ के पैरों से लटकती रस्सी लेकर उसे सोने के मगर के बच्चे की कमर में बाँध दी। फिर उसने उन दोनों को खूब खिलाने के लिए कहा।

नीचे पाताल दुर्ग की तरफ धीमे-धीमे शोर बढ़ता गया। राक्षस जगह-जगह आग जला कर उसके चारों ओर नाचने गाने लगे। कुछ नशे में आग में कूद कर चिल्लाते-चिल्लाते इधर-उधर भागने लगे। कालशम्बर ने उनकी आरे देखकर खुशी में हँस कर कहा, ''यह इन दुष्टों का आखिरी मज़ा है। हमारे लोग मन्त्रों वाली भस्म हवा के सहारे उन पर छोड़ रहे हैं। देखा? किले के ऊपर जो सफेद धुँआ सा दिखाई दे रहा है, वह सब वही है। वे उसके असर से जल्दी ही होश-हवाश खो बैठेंगे। महाकलि, अभी तक वहाँ नहीं आया है। अगर उसपर मान लो औषधियों का असर न भी हुआ तो जब उसके सब साथी-मर-मरा जाएँगे तो मैं उसपर अपने मन्त्रदण्ड का उपयोग करके उसको चुटकी में मार सकता हूँ।''

मान्त्रिक ने इसी प्रकार अपने साथियों से बातें करते, पाताल दुर्ग के राक्षसों के शोर को सुनते हुए कुछ समय बिताया। इतने में पूर्व में सूर्योदय होने लगा।

कालशम्बर जहाँ खड़ा था, वह स्थल सूर्य के प्रकाश में चमकने लगा। नीचे खड़े राक्षस उसे देख न लें इस लिए वह अपने साथियों समेत नीचे झाड़ियों के पीछे जा छिपा और अपने नौकरों को दुर्ग पर अचूक भस्म को मुट्ठियों से फेंकता देखने लगा। '' यह न सोचो कि वे राक्षस केवल

To dance नाचना नाच Bengali नाच

शराब के नशे में ही आग में कूद-फाँद रहे हैं। मेरी बनायी भस्में उन पर गिर कर उन्हें पागल बना रही हैं। अभी थोड़ी देर में वे पूरी तरह उन्माद में पागल हो जाएँगे।''

कालशम्बर शेखियाँ नहीं मार रहा था। वे राक्षस, जो नाच-नाचकर, गा-गाकर खुशियाँ मना रहे थे, यकायक एक दूसरे को बाणों से, गदाओं से पीटने मारने लगे। धीरे-धीरे वे दो दलों में बँट गए और एक दूसरे को मारने लगे। जिसे जो मिलता उसे मारता।

पाताल दुर्ग के सामने का मैदान रणभूमि-सा लगने लगा। मान्त्रिक खुशी से चिल्लाया, ''शाम्भवी'' वह मन्त्रदण्ड को आँखों से लगाने जा ही रहा था कि हाथियों के रथ में महाकलि बाण की तरह लड़ते हुए राक्षसों के बीच आया। उसके साथ बड़ी-बड़ी गदाएँ लिए तीन-तीन मोटे-मोटे हट्टे-कट्टे राक्षस थे। वे अन्य राक्षसों की अपेक्षा अधिक ऊँचे और बड़े थे। वे महाकलि के अंगरक्षकों में से थे।

महाकलि इतनी ज़ोर से गरजा कि पहाड़ की गुफाएँ गूँज उठीं। फिर वह गेंडे के चमड़े के चाबुक से लड़ते हुए राक्षसों को मारने लगा।

उसके अंगरक्षक उनको अलग-अलग करने लगे। अगर कोई उनकी बात ही नहीं सुनता, तो वे उसे गदाओं से मारते।

''कहते हैं कि चोट से भूत भी डरता है। अभी जो हो रहा है, हो सकता है कि हमारी औषधियों का असर जाता रहे।'' कहकर मान्त्रिक

कालशम्बर एक तरफ मुड़ा, ''भद्र, कहाँ है। कुम्भीर के लिए शशिकान्त और कान्तिसेना को छुड़ा कर सुरक्षित स्थान पर ले आने का यही अच्छा मौका है।

मान्त्रिक की बातों में अब उतनी गंभीरता व भरोसा न था, जितना कि पहले था।

धूमक ने उसके व्यवहार से अनुमान लगाया कि वह डर रहा था कि कहीं उसकी योजना बेकार न चली जाए। पाताल दुर्ग में महाकलि और उसके अंगरक्षक, राक्षसों को छोटी-छोटी टुकड़ियों में खड़ा करके उनसे कुछ कह रहे थे। कहीं इन्होंने मान्त्रिक से जो खतरा आने वाला था, उसके बारे में कुम्भीर के किसी बेवफा साथी से कुछ जान तो नहीं लिया था?

To dance नाचना नाचणे Marathi नाचणे

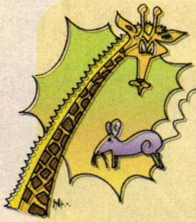

जिराफ की गर्दन ७ फीट लंबी होती है लेकिन गर्दन केवल ७ कशेरुकाओं से बनी होती है संख्या में उतनी ही जितनी कि एक चूहे की होती हैं!

क्या आप जानते हैं?

एक मीनार में धातु के टुकड़े कीलकों (रिवेट्स) द्वारा जोड़े जाते हैं। एफिल टॉवर में २,५०,००० कीलकें हैं!

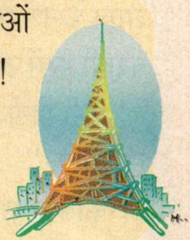

धूमक यह सोच ही रहा था कि भद्र वहाँ दो साथियों को लेकर भागा-भागा आया। ''महामान्त्रिक! कुम्भीर, दुर्ग में हल्ला होता देख, अपने लोगों को लेकर सरोवर की ओर निकल पड़ा है। अन्तिम क्षण में माया सिंगि हमारी मदद के बारे में कुछ बकने-बकने लगी होगी, इसलिए वह उसे कन्धे पर लादकर ला रहा है। यह खबर, पेड़ों पर चढ़े हमारे साथियों से मिली है।''

''जय शाम्भवी! ज़रूर विजय हमारी ही है। अगर हम दस बारह मिनट राक्षसों का ध्यान बँटा सकें, तो उन्हें मरा ही समझो, विरूप। तुम अब अपने काले गरुड़ को राक्षसों पर छोड़ो। उसके पैरों में सोने का गरुड़ बाँध दिया है न?'' मान्त्रिक ने कहा।

विरूप ने गरुड़ पक्षी के सिर को सहलाया। फिर दोनों हाथों से उठाकर राक्षसों के मैदान की ओर छोड़ दिया, वह ''कीं-कीं'' करता उनके ऊपर उड़ने लगा। उसके पैरों से बँधा मगर का बच्चा, तड़पता, छटपटाता सूर्य की रोशनी में दिखाई दिया। जिस किसी राक्षस ने पक्षी को देखा, वह हाथ उठा कर उसे प्रणाम करने लगता। ''महाकलि प्रभु के पिता, धोरकलि अपनी सौवीं वर्षगाँठ पर स्वंय आ रहे हैं।'' वे चिल्लाकर, ज़मीन पर गिर कर साष्टांग करने लगे।

यह दृश्य देख कर कालशम्बर मान्त्रिक बड़ा खुश हुआ। ''सरोवर के पास पेड़ के तनों से बेलों को पानी से बाहर निकालो। उसके साथ एक पत्थर आएगा। अपने लोगों को गुफाओं में से पहाड़ पर आने के लिए कहो।'' उसने अपने अनुचरों को आज्ञा दी।

(अभी है)

To dance नाचना ನರ್ತಿಸಲು **Kannada** नर्तिसलु

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!
Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :..............................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.............................. Pin:..............................

Telephone:..

Mobile:..

Email:..

Subscription Number 9for renewals):..............................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..............................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..............................

....bank.

*Add Rs.60 for non-Chennai cheques. Your subscription will commence in 4 weeks.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries,
Cross Road 'B',MIDC,
Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

अनुनिर्वा

वास्तविक रूप

(मयूरी, उत्परिवर्ती जीव, जो कि अनुनिर्वा के सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेती है, शिवा को बताती है कि वह भोपाल गैस त्रासदी द्वारा एक उत्पीड़ित जीव है। वह यह बताते हुए शिवा की मदद करने का प्रस्ताव रखती है कि उसे भविष्य में इस सब का कर्ज़ चुकाना होगा। वह स्वीकार कर लेता है तथा मयूरी उसे सभा में ले जाने का निर्णय लेती है।)

मयूरी वापस मुझे लेमन तथा ओमेन के पास ले गई जो कि अभी तक वहीं प्रतीक्षा कर रहे थे जहाँ हमने उन्हें आखिर में छोड़ा था। बाकी जा चुके थे। ओमेन पहले से कहीं अधिक चिड़चिड़ा दिखाई दिया। ''समय के बारे में !'' वह साँस लेते हुए बुदबुदाया। ''सभा ने समाचार कैसे ग्रहण किया?'' लेमन ने साँस रोकते हुए पूछा। ''जैसी उम्मीद थी,'' मयूरी ने जवाब दिया। इसे अपने साथ ले जाओ और सुबह सभा के लिए ले आना।

''कुछ खाना चाहिए?'' लेमन ने पूछा। मैंने अचानक महसूस किया कि मैंने युगों से कुछ नहीं खाया। मैं फिर भी भूखा नहीं था। ''हम आनन्द के लिए खाते हैं,'' ओमेन ने कहा। ''अनुनिर्वा भूख से अनजान है।'' मैंने कहा। मैं बहुत कुछ खाना चाहता था लेकिन केवल इसलिए कि मैं यह जानने को उत्सुक था कि ये लोग मुझे किस प्रकार का भोजन परोसते हैं।

''डोडो का माँस अच्छा है,'' लेमन ने कहा। मैंने उसकी ओर आश्चर्य से देखा कि वह मज़ाक तो नहीं कर रही। ''क्या? तुम्हें शक है मेरे शब्दों पर?'' ''एरर...'' मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कहूँ हाँ या ना... दोनों ही प्रतिक्रियाएँ आक्रामक होती हुई दिखाई दीं ! ''तुम्हारे पूर्वज सैकड़ों की संख्या में हमारा शिकार करते थे क्योंकि हम स्वाद में बहुत ही अच्छे थे!'' ओमेन ने कहा। ''देखो, करोड़ों वर्ष पूर्व जो कुछ भी लोगों ने किया उसके लिए मैं शर्मिंदा हूँ, ठीक है? मैं यह कहलवाते हुए तंग आ चुका

To dance	नाचना	ନାଚିବା	Oriya	नाचिबा

हूँ कि मैं इस प्रकार का अपराधी हूँ।'' मैंने चिल्लाया। मैं थका हुआ था। मैं नहीं जानता था कि मेरा परिवार कहाँ था। मैं एक अजनबी जगह पर उतरा जहाँ मैंने जो कुछ कहा उसे एक गुनाह के लिए, जो शुरुआत से मैंने किया ही नहीं, मुझे दोषी सिद्ध करने हेतु प्रमाण बना लिया गया और अब मैं स्पष्ट रूप से विलुप्त था।

''जो मैंने सबसे ज़्यादा खाया वह थीं मछलियाँ और मुर्गे ! और मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुम सब ने भी अन्य प्राणियों को खाया होगा जब तुम धरती पर थे ! इसे प्राकृतिक संतुलन कहते हैं, ओके ! अतः मेरे साथ ऐसा सुलूक करना बंद करो जैसे कि मैं एक शैतान का अवतार हूँ !''

अप्रत्याशित रूप से लेमन तथा ओमेन दहाड़ मारकर हँस पड़े। लेमन अपने पंख फड़फड़ाने लगी और उसके गालों पर आँसू लुढ़क पड़े। आश्चर्य-जनक रूप से हँसी का एक प्रदर्शन करने के लिए ओमेन की त्योरियाँ क्षण भर के लिए ग़ायब हो गईं। ''क्या? इतना मज़ेदार क्या है?'' मैंने इसे पूरी गंभीरता से लेते हुए कहा।

''क्या अनूठा तरीका है ! जेम्स बॉण्ड की योग्यता, मुझे माननी चाहिए !'' ओमेन चीखा। ''तुम पागल हो,'' मैंने शान्तिपूर्वक कहा। ''ओह निश्चय ही, हम हैं !'' लेमन ज़ोर से हँसने लगी। ''बच्चे सुनो, तुम पंद्रह साल के हो। यह हमारी आयु की तीन शताब्दियों से कम नहीं है। हमें मालूम है कि तुम गर्म खून के जवान आदमी हो और इस सब के बाद तुम्हें लेकिन यह याद रखना चाहिए कि हम तुम्हारी सहायता की कोशिश कर रहे हैं।

डोडो का माँस अच्छा है-यह एक कानून है।''

''क्या?''

''यह संभवतया अनुनिर्वा में सर्वाधिक पाया जानेवाला भोजन है। इसलिए, वास्तव में, हमारी सबसे अधिक माँग रहती है।'' उसने कहा।

''इसलिए तुम स्वयं के भक्षण की इजाजत दे देते हो?'' मैंने भय से घबराते हुए पूछा।

''निश्चय ही हम देते हैं,'' लेमन ने साधुता से कहा।

''तब... तब तुम वापस कैसे आते हो?''

''यह इस तरह है। वर्तमान में प्राणी मरते हैं, वे दोबारा जन्म लेते हैं क्या ऐसा नहीं है? मानवों का इसके लिए विश्वास करना अत्यंत आसान है।''

मैंने सर हिलाया। दादाजी पुनर्जन्म के सिद्धान्तों के बहुत बड़े शौकीन हैं। वे कौओं को अकसर

To dance नाचना નાચવું Gujarati नाचवुं

भोजन कराते हैं क्योंकि वे कहते हैं कि वे हमारे पूर्वज हैं।

''तब फिर क्या होता है,'' लेमन आगे बोली, ''क्या अणु एक बिल्ली या बकरी स्वयं को दोबारा बदल कर एक शेर या मानव का रूप ले लेते हैं। यह एक समान मामला है...तुम जानते हो, बालू से वस्तुएँ बनाना। आप गीली बालू लीजिए एक आदमी बनाइए या एक पहाड़ बनाइए या एक घर। लेकिन इसमें सार क्या है? यह बालू।''

मैंने बहुत कोशिश की समझने की। जब मैं छोटा था तब जब भी बिजली जाती थी मैं छाया से खेला करता था। मैं हिरन की, चूहे की, बड़ी चिड़िया की आकृतियाँ बनाया करता था... लेनिक इस सब पीछे एक सोच थी कि यह मेरे हाथ से बनी आकृतियाँ मात्र हैं।

''यही सार है जो अनुनिर्वा के अंतर में है। आत्मा। वर्तमान में जब यह सुनिश्चित हो गया कि डोडो अब कभी अपने वास्तविक रूप में नहीं आ सकते, सार तत्व ने स्वयं को दूसरी

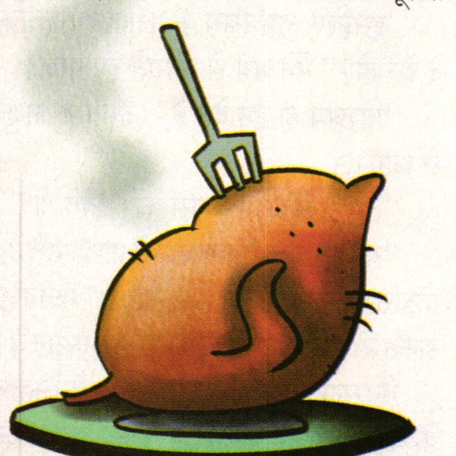

आकृतियों में ढाल लिया। इसलिए हममें से कुछ ब्लू व्हेल या सुअर या इससे भी बदतर, मानव बन सकते थे।'' मैंने व्यंग्य को नज़रंदाज़ कर दिया। मुझे यह वार्तालाप बहुत ही रोचक लग रहा था।

ओमेन ने बात लपकी, ''लेकिन डोडो का सार, डोडो का अपना रूप है...यह अनुनिर्वा में आयातित था...एक मात्र जगह जहाँ उसके लिए इसी रूप में ज़िंदा रहना संभव होगा।

''तो तब क्या होता है जब यहाँ खा लिए जाते हो?'' मैंने पूछा।

''सार हमें पुनर्निर्मित कर देता है। हम बिना घायल हुए अपने वास्तविक रूप- वास्तविक आकार में आ जाते हैं क्योंकि यहाँ हम अपने शुद्धतम सार रूप में विद्यमान हैं तथा हम किस रूप में पैदा होना चाहते हैं यह हम स्वयं चुन सकते हैं।''

ओमेन ने मेरी ओर भ्रमित भंगिमा से देखा और बोला, ''क्या तुम इस पर भी विश्वास करोगे जब मैं कहूँ कि बहुत से मानव भी इस सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं?'' मैंने कुछ नहीं कहा। वह आगे बोला, ''क्या तुमने प्लेटो के बारे में सुना है?''

निश्चय ही सुना है। दादाजी अकसर पढ़ा करते थे, वह एक यूनानी दार्शनिक था।

''वैसे, प्लैटो ने इससे मिलता-जुलता कुछ कहा था। यह आकारों का सिद्धान्त कहलाता था।

''तुम प्लैटो के बारे में कैसे जानते हो?'' मैं बिना सोचे बोल उठा।

To dance नाचना নাচিবলৈ Assamese नाचिबलै

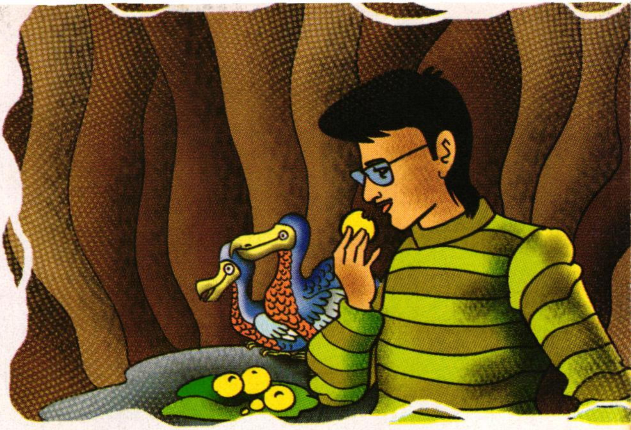

"जो वर्तमान में मानव बनने के प्रशिक्षण के लिए जाते हैं उन्हें एक पढ़ना और लिखना सिखाती है", लेमन ने समझाया।

"खैर जो भी हो, प्लैटो के सिद्धान्त के अनुसार, संसार में हम जो भी आकार देखते हैं सब भ्रम हैं। वे असली रूपों की नकल हैं। वास्तविक आकार शाश्वत एवं नश्वर हैं।"

"हुह?"

"मतलब, असली आकार जैसे हैं। वैसे ही रहते हैं। लेकिन भ्रम जो कि इसके प्रतिरूप हैं परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।"

"मुझे अब भी अटपटा लग रहा है!"

लेमन ने एक लंबी साँस छोड़ी। "मैं तुम्हें एक उदाहरण देती हूँ। प्लैटो का उदाहरण, वास्तव में। हम कई प्रकार के घोड़े देखते हैं, है कि नहीं? सफेद, काले, भूरे, चकतेदार, धब्बेदार, लंगड़े...इत्यादि लेकिन जब मैं "घोड़ा" शब्द बोलती हूँ तो तुम क्या सोचते हो? एक आकृति तुम्हारे मस्तिष्क में उभरती है। वही असल रूप है। वह रूप ही अस्तित्व में रहता है। यही सार है, आत्मा," लेमन ने बात पूरी की।

"इसलिए यह सार तत्व...मेरे पास भी एक सार है?"

"निश्चय ही तुम्हारे पास है। वह भी एक मानव का। केवल तुम इसे इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि तुम अनजान हो।"

थोड़े ही समय में मैंने बहुत सी जानकारी प्राप्त कर ली थी अतः मेरा दिमाग घूम गया।

"रात का भोजन?" ओमेन की कोमल तथा तेज़ आवाज़ आई।

"हाँ", मैं बुदबुदाया। लेकिन, कृपया, डोडो का माँस नहीं। क्या मैं कुछ सब्ज़ियाँ ले सकता हूँ?"

"अपना मन मुताबिक करो!" लेमन हँस पड़ी। "हमारे साथ आओ," ओमेन ने अपना भारी पंख मेरे कंधे पर रखते हुए कहा।

वह मुझे एक छोटी सी गुफा में ले गया, जो आश्चर्यजनक रूप से साफ थी, और मुझे कुछ फल खाने को दिए। मैंने शक से एक आयताकार सा पीले रंग के फल का टुकड़ा खाया, लेकिन यह बहुत ही स्वादिष्ट लगा। मैं थोड़ा और खाने की कोशिश की पर बहुत थका हुआ था। मुझे अभी बहुत कुछ स्पष्ट करना था।

"मैं दादाजी को कब देख सकूँगा?"

"सभा के बाद। मयूरी को सभी अनुनिर्वा-वासियों को सूचित करना होगा कि तुम तथा तुम्हारे साथी मानव यहाँ रहनेवाले हैं। उसे उन्हें शांति बनाए रखने के लिए कहना होगा। एक बार

To dance | नाचना | നൃത്തം ചെയ്യുക | Malayalam | नृत्तं चेय्युक

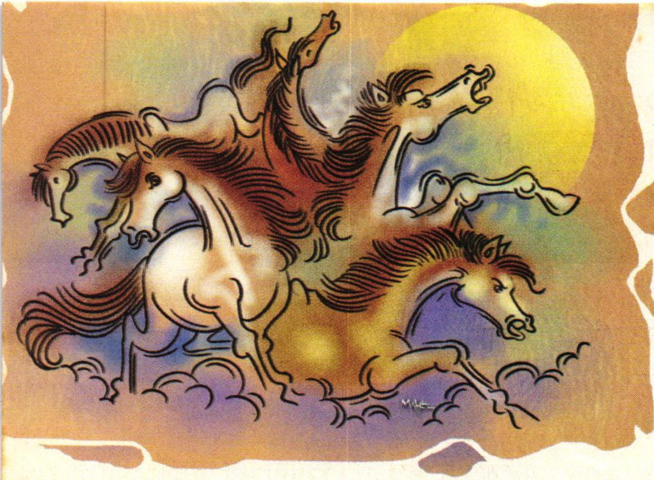

धीरे-धीरे मेरी आँखें बंद हो गयीं। मैं एक सुखद, आसान नींद में डूब गया। अपने सपनों में मैं एक गुफा में लेटा सितारों को देख रहा था। मैंने देखा क्या वह एक भालू था? या टोपवाला एक चेहरा? और तब चेहरा मुड़ा औ उसने मुझे देखा। उसकी आँखें जलते हुए तारे के समान थीं। टोप वास्तव में एक जोड़ी गुस्से में उठे हुए हाथ थे।

यह सुनिश्चित हो जाए, हममें से एक वहाँ जाकर उन्हें जल परियों से ले आएगा।

''मैंने सर हिलाया। दिन भर की घटनाओं से मैंने स्वयं को थोड़ा प्रोत्साहित महसूस किया। मैं अनुनिर्वा में पहले दिन जीवित रहने में कामयाब रहा। उतनी सफलतापूर्वक नहीं जितना कि मैं चाहता था। लेकिन जंगल में जीवित रह पाना अपने आप में एक उपलब्धि है।

डोडो ने अपने पंख हिलाकर मुझे अलविदा कहा। गुफा में मेरे साथ रुकने के निमंत्रण को विनम्रता से अस्वीकार करते हुए उन्होंने बताया कि वे बाहर घोंसले में ठहरे हैं।

मैं लेट गया और अंधेरे आसमान में जगमगाते सितारों को देखने लगा। वे मुझे कुछ कहते प्रतीत हो रहे थे। वह क्या था? नक्षत्रों को ढूँढने की कोशिश में मैंने अपनी आँखें चारों ओर दौड़ायीं। क्या वह एक भालू था? या टोप के साथ एक चेहरा? मैं मुस्कुराया। मैं अकसर अपने घर की छत पर लेट जाता था और किसी दिन एक खगोलविद् बनने के सपने देखा करता था।

अपनी नज़रों से मेरे हृदय को चीरते हुए उसने मेरी ओर देखा। पेड़ों की एक रहस्यमयी आवाज़ की भाँति... मैं उसकी डूबती फुसफुसाहट सुन सकता था। ''दौड़ो... दौड़ो... दौड़ो'' हवा कहती हूई महसूस हुई। मेरी बाहों के रोंगटे खड़े हो गए। मैं एक झटके से उठा। एक पल के लिए मैंने सोचा कि मैंने आसमान में चेहरा देखा... लेकिन मैंने दोबारा देखा वह ग़ायब हो चुका था।

आखिरकार यह एक सपना मात्र था। मैंने स्वयं को एक कायर की भाँति व्यवहार करने के लिए धिक्कारा और निश्चयपूर्वक अपनी आँखें बंद कर लीं। सूर्योदय के साथ ही चाइनीज़ हाथी मेरे कानों में ज़ोर से चिंघाड़ा। 'हैलो, कैसे हो तुम? अच्छा मौसम है।'' उसने सूर्य की तरह मुझसे मुस्कुराते हुए कहा।

''रात में क्या अच्छी नींद आई?'' ''खराब नहीं थी'' मैंने कहा।

क्या तुम ने कल रात डोडो का माँस खाया था?'' उसने चिंतित होते हुए पूछा।

''नहीं, क्यों?''

To dance | नाचना | ᱮᱱᱮᱡ | Santali | एनेज

"ओह अच्छा हुआ। अगर तुम वह सामान खाते तो तुम्हारा पेट खराब हो जाता," उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली। डोडो को मत बताना। तुम जानते हो, मैं उन को दोषी नहीं ठहराना चाहता। अच्छा स्वभाव है और वही सब।"

"लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि यहाँ डोडो माँस उस दिन का अनुज्ञप्त भोज था!"

"हा-हा," चाइनीज़ हाथी रूखेपन से हँसा। "वे अपनी विलुप्तन गाथा बदलने का बहुत प्रयास कर रहे हैं।"

"क्या?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"ठीक है, क्या तुम जानते हो डच मानव डोडो को क्या कह कर पुकारते हैं? वे उन्हें अकसर "वाल्घवोगल" कहते हैं जिसका अर्थ होता है "घृणित चिड़िया"! स्पष्ट रूप से उनके माँस का स्वाद, वह वीभत्स होता है।" उसने खींसे निपोरते हुए कहा।

"तब उनका शिकार क्यों किया जाता है?"

"ओह, तुम्हें पता है, मैं अंदाज़ा लगा सकता हूँ कि बाद में मानवों ने उनके माँस पकाने के विभिन्न अच्छे तरीके निकाल लिए होंगे। जैसे कि कहा जाता है कि इसमें से डोडो-पन निकालो। कई तो सिर्फ खेल के लिए मारी जाती है," उसने समझाया।

मैं विस्मृत था।

"तुम्हें पता है, वे बहुत संवेदनशील हैं, बहुत ही संवेदनशील। उनके मनों में एक हीन भावना है। वे हमेशा सिद्ध करने में लगे रहते हैं कि वे डोडो की तरह गूँगे नहीं हैं।" वह हँसते हुए चीखा। उसकी छोटी-छोटी हाथी की आँखों से आँसू निकल आए और उसने हँसते हुए मेरी पीठ थपथपाई। मैं स्वयं को रोक न सका और एक मुस्कान छूट गई। "तुम हर कीमत पर एक पागल हाथी हो!"

चाइनीज़ हाथी ने सज्जनता से अपना सर हिलाया। "तुम्हें मालूम है, तुम्हारे बालों में बालू है?" उसने बात करते हुए पूछा।

इस सभा के दिन को याद करते हुए मैंने जल्दी से अपने बालों को सँवारा। मेरी पहचान का दिन। निर्णायक दिन।

हमें कहाँ जाना है?" मैंने अपने डर की एक सिहरन को अपनी आवाज़ से दूर रखते हुए पूछा।

"मैं तुम्हें वहाँ ले जाऊँगा," उसने मुझे मुस्कुराते हुए आश्वस्त किया।

"डोडो कहाँ हैं?"

"ओह वे किसी को उन्हें नाश्ते में खाने के लिए राज़ी करने गई होंगी," उसने कहा और दोबारा से एक ज़ोरदार हँसी फूट पड़ी। ***(आगे है)***

- सौम्या राजेन्द्रन

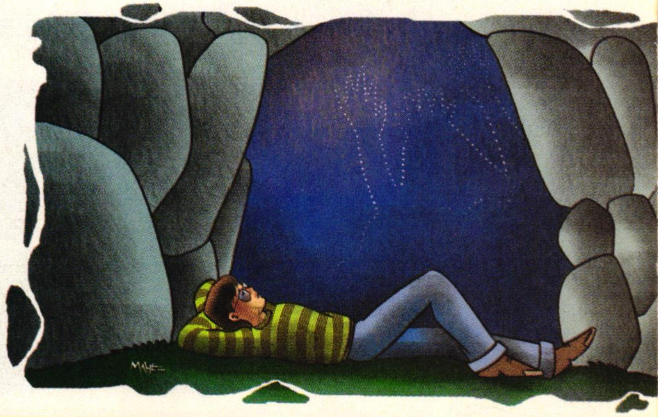

To dance	नाचना	नर्तितुम्	Sanskrit	नर्तितुम

उदीयमान सितारा

व्यक्तिगत विवरण :

- उसके कुछ पसंदीदा म्यूज़िक बैण्ड्सः इयूफोरिया, ईग्ल, बॉम्बे रॉकर्स.
- वह बैडमिंटन तथा फुटबॉल खेलना पसंद करता है। वह कहता है, ''मैं खेल प्रेमी हूँ।''
- उसका खेल दर्शनः कठिन परिश्रम की एवज में कोई पगडंडी नहीं है !

उपलब्धियाँ :

- अंतर्विद्यालय एअर पिस्टल एवं राइफल शूटिंग चैम्पियनशिप, जम्मू (२००९) में एक स्वर्ण पदक हासिल किया।
- स्टेट ओपन चैम्पियनशिप की .१७७ एअर पिस्टल प्रतियोगिता, जम्मू (२००९) में एक स्वर्ण पदक हासिल किया।

रोहन भाटियल

वह एक महान पल था जब अभिनव बिंद्रा ने भारत के लिए व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीता, क्यों ऐसा ही था न? जम्मू का रोहन भाटियल कहता है कि इस घटना ने उसे आवेशित कर दिया!

उसने राइफ शूटिंग से शुरूआत की लेकिन बाद में उसने पाया कि उसका वास्तविक शौक एअर पिस्टल में था। अब वह स्वयं को जम्मू एंड कश्मीर में होने वाली राइफल ऐसोसिएशन शूटिंग रेंज .१७७ एअर पिस्टल (१० मीटर) प्रतियोगिता की तैयारी में है। वह श्री सुभाषचन्द्र से प्रशिक्षण लेता है। दिल्ली पब्लिक स्कूल की दसवीं कक्षा का छात्र कहता है, ''शूटिंग बस धैर्य, ध्यान, लगन तथा सबसे ऊपर परिपूर्णता मात्र है। इसलिए यह इन सब को सीखने का साधन है तथा धीरे-धीरे आप अपनी दिनचर्या में इन सबका पालन करने लगते हैं।'' वह अपने माता-पिता, प्रशिक्षक तथा विद्यालय द्वारा दिए गए अप्रतिम योगदान हेतु अत्यंत कृतज्ञ है। वह कहता है, अब उसे पूरी तरह इस्तेमाल करने की कोशिश करता हूँ !'' रोहन आगे बताता है कि खेल एक प्रकार से एक आखिरी सबसे सही शॉट मात्र है अतः यह उसे परिणामोन्मुखी बनना सिखाता है। इस माह के उदीयमान सितारे को आसमान में अपना लक्ष्य साधने तथा अपने ध्येय प्राप्ति हेतु *चन्दामामा* की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ !

To talk | बात करना | మాట్లాడడానికి | Telugu | माट्लाडडानिकि

पानी में संग्रहालय

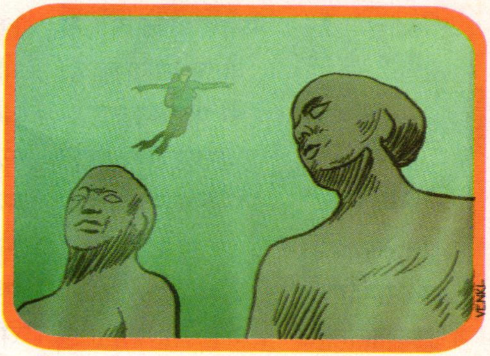

क्या कभी पानी में संग्रहालय सुना है? मैक्सिको में पानी में सबसे बड़ा संग्रहालय बनाने की योजना बनाई गई है तथा नवंबर'०९ में काम भी शुरू किया जा चुका है। ''अर्द्धजलीय मूर्ति संग्रहालय'' यूकैटन प्रायद्वीप पर राष्ट्रीय उद्यान के पश्चिमी तट पर स्थापित किया जाएगा।

पानी में संग्रहालय बनाने का विचार मैक्सिको सरकार द्वारा समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा हेतु अपनाया गया। जेम्स गोन्ज़ालेज़, राष्ट्रीय उद्यान के निर्देशक, विस्तार से बताते हैं, ''पानी में संग्रहालय पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा तथा प्राकृतिक जलीयवनस्पतियों को आराम देगा। यह एक जीर्णोद्धार प्रक्रिया है।'' शैल भित्ति वनस्पतियाँ केवल खूबसूरत नहीं होतीं बल्कि तटों को सुरक्षा भी प्रदान करती हैं।

तुम्हारे लिए एक ताज़ा संसार

यू.के.गुड फूड चैनल ने लोगों में स्वास्थ्यवर्धक भोजन के प्रचार हेतु कार्ल वार्नर को नियुक्त किया। मास्टर फोटोग्राफर के प्रोजैक्ट में शामिल हैं- लंबी फलियों, हरी प्याज़ और मीठे भुट्टे के दाने से बना हाउस ऑफ पार्लियामेंन्ट, चेरी, टमाटरों व हरी फलियों से बना बड़ा चक्र... सूची बस चलती जाती है। यह देखने लायक वास्तविक दृश्य हैं- ब्रोक्ली से तैयार की मदमाती हरियाली, मूली तथा चौलाई से बने रंग-बिरंगे शहर। अगर ये इतना खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत कर सकती हैं, तो निश्चय ही ये हमारे भोजन में विशेष महत्वपूर्ण जगह रखती हैं। यही तो कार्ल वार्नर तथा उनके समूह के पाँचों सदस्य बतलाना चाहते हैं।

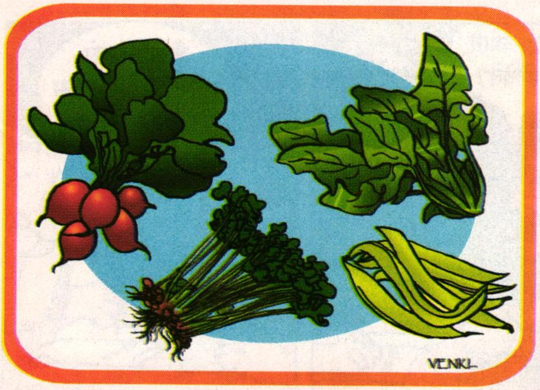

To talk बात करना பேச Tamil पेस

हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

मनीषा अपने तोते को बोलना सिखा रही है। मेरे पीछे बोलो:
"मैं टहल सकता हूँ।"
"मैं टहल सकता हूँ।"
"मैं बोल सकता हूँ।"
"मैं बोल सकता हूँ।"
"मैं उड़ सकता हूँ।"
"यह झूठ है।"

विद्यालय के दो बच्चे भोजनावकाश के समय बात कर रहे थे।

मेहुल: आज सवेरे कक्षा में दीवार घड़ी गिर गई। अगर वह एक क्षण पहले गिरी होती तो सीधा मनीषा मैडम के सर से टकराती।

मनोज: वह घड़ी हमेशा देरी से चलती थी!

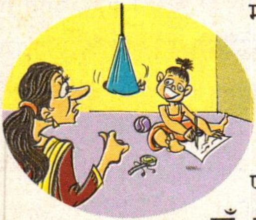

माँ: बानू तुम क्या लिख रहे हो?

बानू: मैं बेबी शानू को एक पत्र लिख रही हूँ।

माँ: लेकिन तुम लिखना तो जानते नहीं!

बानू: तो क्या? शानू पढ़ना नहीं जानता!

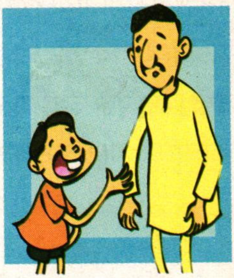

जॉन: डैडी, फादर मैथ्यू कहते हैं कि हम यहाँ दूसरों की सहायता करने के लिए हैं।

पिता: बिल्कुल, हम हैं।

जॉन: तब दूसरे यहाँ किसलिए हैं?

दत्तू

To talk बात करना বলা Bengali बला

FABER-CASTELL

since 1761

छोटा कलाकार

FABRIC COLOUR CONTEST

Dear Friends;

Happy to see you here! We are glad to introduce an interactive and creative contest before you; which we call it as "Little Artist" contest. All what you have to do is participate in all the six contests and send your creative along with the product carton alongwith your passport size photographs to the given address for each contest, best entries will win attractive gift hampers, creative CD's and certificates each time. Entries for the mega prize will be for those people who participated all the 6 contests.

There will be a lucky draw from these participants and will announce the winner

So hurry start participating NOW!

ABOUT FABER CASTELL

Established in 1761 in Stein, Germany, Faber-Castell is a 250 year old company, internationally known as one of the world's leading players of writing, drawing, colouring and marking implements. With a range of over 1800 products world wide, Faber-Castell works with an ambitious goal, "Always to make the best that can be made anywhere in the world".

So, when you see a Faber-Castell pack, rest assured that you are buying the very best

Faber-Castell's Commitment to Child Safety and Environment

One of Faber-Castell's Brand essentials is – Social responsibility & Environmental sustainability. As part of our social commitment towards our consumers, Faber-Castell India offers products which are completely CHILD SAFE and ENVIRONMENT FRIENDLY

Child Safety for us is using ingredients and material which are non-toxic and have food-grade dyes. Not just the components but also the design is critical to ensure that the Product is safe for the child. We take special care to ensure RIGHT PRODUCT FOR THE RIGHT AGE!

Faber-Castell cares for environment and our commitment is to use recyclable and environment friendly material and processes. Our factories are ISO 9000 : 2008 & ISO 14001 : 2004 certified for quality and environmental management systems.

At Faber-Castell whatever that we do we believe that it should be SAFE AND FRIENDLY for the Society, Planet and You!

FABER CASTELL WISHES ALL THE CONTESTANTS A FRUITFUL JOURNEY WITH THE BRAND AND A HAPPY NEW YEAR

12 Fabric Colours

6 Fabric Colours

क्रियाकलाप

Creative Projects with FABER-CASTELL Fabric Colours

Very few art or craft activities offer more opportunities for creative expression than painting on fabric especially for wearable art. You don't need fancy tools or techniques to put your stamp on a T-shirt. You don't even need to know how to paint. FABER-CASTELL offers tips that will help you get started and styles that will inspire you to dream up your own. Decorate your fabric and home decor with various blocks. After all, who knows what can come from a vision and a vegetable

Make your own designer wear or decor using Potato Printing method

1 Push a cookie cutter through the potato.

2 Keep potato flat on the table. Break away excess potato

3 Remove the shape out of the cutter

4 Apply fabric colour on the surface of the cut potato.

5 Stamp on your favourite T-shirt, pillow or any surface.

Dry for 24 hours and then iron the fabric on reverse side to fix the colour

Fabric Colours (Pearl)

Fabric Colours (Fluorescent)

Fabric Colours (Metallic)

Send all your entries to:

CHANDAMAMA INDIA LTD 2/513, B-3, LUNIC INDUSTRIES, CROSS ROAD 'B', MIDC, ANDHERI (EAST), MUMBAI-400093, PHONE +91 22 28312872 / 28311849

हास्य-कथा

ज़हीन फकीर

बादशाह अकबर बहुत ही कम उम्र में शाही तख़्त पर क़ाबिज़ हुए। जी तोड़ मेहनत, हिम्मत व बहादुरी ने चमत्कार किया और वह मुगलिया सल्तनत के सबसे महान शासक बन गए। उनकी हुकूमत बहुत दूर-दूर तक फैली थी! उनका महल अद्‌भुत और शानदार था। उनके दरबारी तथा कवि हमेशा उनके गुणगान किया करते। कुछ लोग उन्हें इस ज़मीन का बादशाह कहते तथा कुछ कहते कि वह स्वयं खुदा है।

कौन ऐसा होगा जो इतनी ज़्यादा चापूलसी भरे शब्दों को सुनकर घमंड से फूल कर कुप्पा न हो जाएगा? बादशाह अकबर भी महसूस करने लगे कि वे बहुत ही ख़ास इंसान है।

वे बहुत ही घमंडी व गुमानी हो गए। बेहद मामूली बातों के लिए भी लोगों को सज़ा देने लगे और ऐसे व्यवहार करने लगे मानो यह दुनिया उन्हीं की बदौलत है। उनके सबसे प्यारे दरबारी तथा दोस्त, बीरबल ने देखा कि बादशाह दिन ब दिन बद से बदतर होते जा रहे हैं। उसने अपना सर दुःख से झटका। बादशाह का एक ख़ैरख़ाह होने के नाते उनके तौरतरीकों को बदलना क्या उसकी ज़िम्मेदारी नहीं बनती? बीरबल ने एक अच्छी सी योजना बनाई।

एक दिन बादशाह को अपने बग़ीचे में टहलने की इच्छा हुई। उसका सबसे प्यारा साथी, बीरबल कहीं भी दिखाई न दिया। वह किसी के साथ बात करना चाहता था। क्या सौभाग्य है! खूबसूरत गुलाबों की झाड़ियों के सामने एक फ़क़ीर खड़े थे!। उनकी ढीली-ढाली लटकती हुई लंबी-सी दाढ़ी और ज़ाफ़रानी रंग का लिबास पहने थे।

लेकिन अकबर ने त्योरियाँ चढ़ाई। उसे आश्चर्य हुआ कि बिना उसके हुक्म के उसके

To talk | बात करना | बोलणे | Marathi | बोलणे

निहायत ही जाती बग़ीचे में कैसे घुस आया। वह तेज़ी से फ़क़ीर के पास पहुँचा।

"फाज़िल मुहतरम, कौन हो तुम? तथा मेरे बग़ीचे में क्या कर रहे हो?" अकबर ने सवाल किया।

"पहले सवाल का जवाब तुमने खुद ही दे दिया। मैं वाकई बहुत ही विद्वान कहलाया जाता हूँ!" फ़क़ीर ने जवाब दिया।

फ़क़ीर ने आगे कहा, "खूबसूरत गुलाब की झाड़ियाँ! मैं इनकी सुन्दरता का बख़ान किए बिना न रह सका! क्या ये तुम्हारी हैं?"

अकबर ज़ोर से चिल्लाया। "बिल्कुल! यह मेरा शाही बग़ीचा है तो ये वाकई मेरी हैं!" उसने कहा।

"आह! यह पूछना मेरी बेवकूफी थी, थी न? तो और क्या-क्या है आपका? मैं वाकई जानना चाहता हूँ," फ़क़ीर बोला।

इस बात पर अकबर मुस्कुराया और बेइंतेहा खुशी से जवाब दिया। "सुनो, यह बग़ीचा शानदार महल, वे किले...वे सब मेरे हैं!"

"और नदी? यह शाहाना शहर? क्या वे सब भी तुम्हारे ही हैं?" फ़क़ीर ने पूछा।

"हाँ! यह पूरी हुकूमत जो मीलों-मीलों दूर तक फैली है...इसका सब कुछ मेरा है! तुम्हारा और कोई शक है क्या?" हर पल और ज़्यादा नाराज़ होते हुए अकबर ने पूछा।

"सब्र, हुजूर! मैं एक बहुत ही कुतर्की खोजी आदमी हूँ। मुझे ज़रा बरदाश्त कीजिए," फकीर बोला।

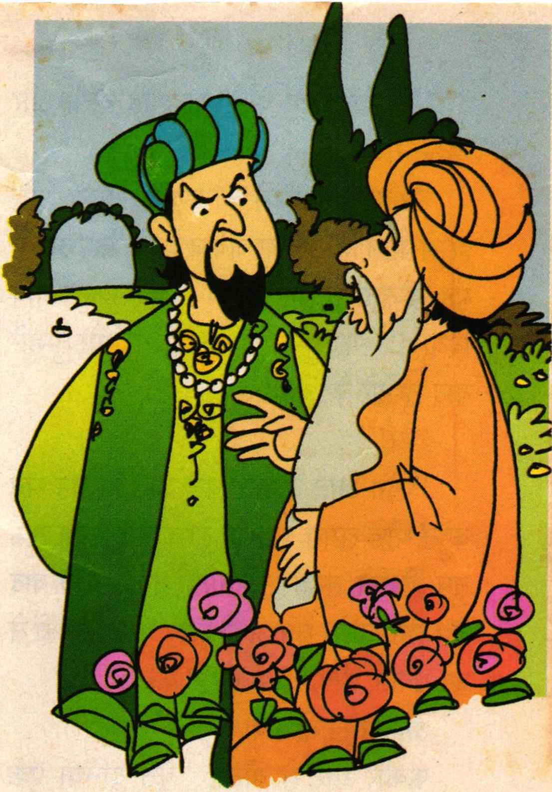

अकबर, लेकिन, बहुत ही बेसब्र हो रहा था। वह हर समय लोगों से अपनी खुशामदें व तारीफें सुनने का आदी था!

"तुमने मेरा मिज़ाज बिगाड़ दिया, ओ फ़क़ीर! मेहरबानी करके मेरे बग़ीचे से तुरंत निकल जाओ! अकबर खीज गया।

फ़क़ीर ज़ोर से हंसा। "मेरा बग़ीचा, मेरा महल, मेरा किला मेरी हुकूमत...तुमसे पहले ये सब किसके थे?"

"मेरे अब्बाजान के," बादशाह ने जवाब दिया।

"और तुम्हारे पिता से पहले?" फ़क़ीर ने सवाल किया।

To talk | बात करना | ಮಾತಾಡಲು | Kannada | माताडलु

''मेरे दादाजान के!'' बादशाह बोला और चकरा गया।

''और उससे पहले...? फ़क़ीर ने पूछा, और इससे पहले कि अकबर जवाब देने के लिए अपना मुँह खोलता, उसने खुद ब खुद इसका जवाब दिया, ''...यह तुम्हारी पूर्वजों के थे! और तुम्हारे बाद तुम्हारे बेटे के!''

''हाँ!''

''लोग आते हैं और चले जाते हैं! यह सब बहुत थोड़े समय के लिए तुम्हारा है। जब तक तुम जीओगे, तुम्हारी ज़िंदगीभर तक। उसके बाद तुम छोड़ दोगे। तुम अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकते, ठीक?'' फ़क़ीर ने कहा।

अकबर ख़ामोश था।

फ़क़ीर धीरे से बोला, ''पूरी दुनिया एक धर्मशाला की तरह है, हुज़ूर! हम नश्वर यहाँ आते हैं, थोड़ा यहाँ ठहरते हैं, फिर चले जाते हैं। हम सब केवल ''गुज़र रहे हैं,'' और एक दिन हम मर जाएँगे तथा कोई और हमारे अधिकारों को अपनी हुकूमत में लेगा!'' ''कितने सही हो तुम!'' अकबर ने टिप्पणी की। ''ओ फ़क़ीर, मेहरबानी करके मुझे अपनी दाढ़ी खींचने की इजाजत दो'', उसने कहा और फ़क़ीर की दाढ़ी पर लपका। वह आसानी से उतर गई।

फ़क़ीर कोई और नहीं, बीरबल थे! उसने अपनी पगड़ी और ज़ाफ़रानी रंग की पोशाक़ उतार दी तथा अकबर की ओर मुस्कुराया।

''मुझे माफ़ कीजिए, जहाँपनाह, यह मेरा एक छोटा सा तरीका था आपको यह याद दिलाने का...'' बीरबल ने कहना शुरू किया। लेकिन अकबर ने उन्हें गर्मजोशी से गले लगा लिया। ''बीरबल....ओह, बीरबल, अपने सीधे-सादे तरीकों से मुझे अक्लमंदी की बातें समझाने के लिए मैं हमेशा तुम पर विश्वास कर सकता हूँ।'' अकबर ने कहा।

उसने बीरबल को सोने के खनखनाते सिक्कों से भरा एक रेशमी थैला उपहार में दिया।

- रमा रमेश पुनर्कथित

To talk | बात करना | କଥା ହେବା | Oriya | कथा हेबा

Log onto www.chandamama.com

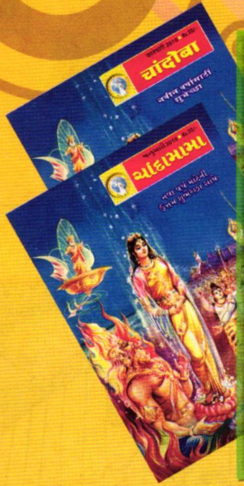

Your Chandamama is available in many avatars!

Regional Chandamama (9+ age group): Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

Rs.20/-

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana * Vikram-Vetal * Panchatantra * Arya

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

Rs.15/-

Junior Chandamama
(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities,
pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with **Mintoo, Gooba,** and a host of other whacky characters!

* **Picture story**
* **Puzzles & Crosswords**
* **Colouring**
* **Rebus**

You name it and it's got it!

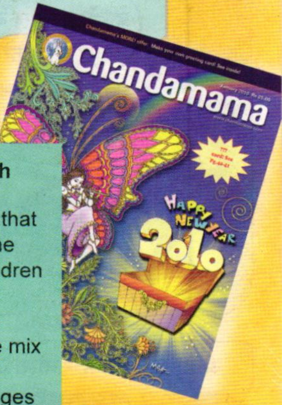

Chandamama English
(9+ age group):
A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 72 pages that value fun!

* **Sports**
* **Technology**
* **Contemporary stories**
* **Classics**

Rs.25/-

Revamped.
Redesigned.
Relevant. Read it!

CHANDAMAMA (Hindi) January 2010 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11